मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

आलम-ए-अरब की रूह

"मुसलमान आलम-ए-अरब को इस हैसियत से देखता है कि वह इस्लाम का गहवारा है, इन्सानियत की पनाहगाह है, दुनिया की क़यादत का मरकज़ है, रोशनी का मीनार है, उसका अक़ीदा है कि मुहम्मद-ए-अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आलम-ए-अरबी की जान, उसकी इज़्ज़त व इफ़्तिख़ार का उनवान, उसका संग-ए-बुनियाद हैं, अगर उससे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जुदा कर दिया जाए तो अपने तमाम ताक़त के ज़ख़ीरों और दौलत के चश्मों के बावजूद उसकी हैसियत एक बेजान लाश और एक नक़्श-ए-बेरंग से ज़्यादा न होगी।"

मुफ़क्किर-ए-इस्लाम हज़रत मौलाना
सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

(इन्सानी दुनिया पर मुसलमानों के उरुज व ज़वाल का असर: 310)

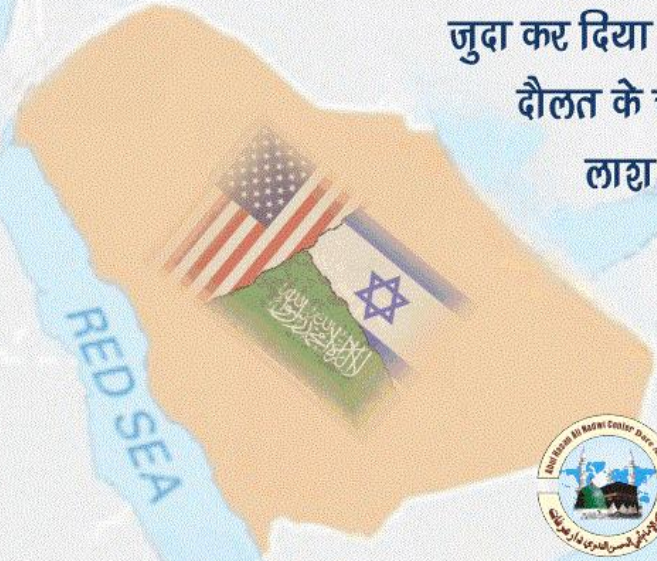

January 2022

Rs.15/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

सुन्नत व बिदअत का मेयार

"मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ की शुरूआत शुरू ज़माने से ही हो गयी थी, लेकिन ग़ौर से देखिए यह इख़्तिलाफ़ ज़्यादातर नज़रियात व राय का था, जिनको अमल से ताल्लुक़ न था कि ग़ैर माद्दी, ग़ैर महसूस उमूर के मुताल्लिक़ कोई महसूस व माद्दी, अमली शहादत पेश नहीं की जा सकती, जैसे यह कि ख़िलाफ़त मुसलमानों के मशविरे से है नसे इलाही से है। यह शिया और अहले सुन्नत के बीच सबसे अहम बहस है, या कि क़यामत में अल्लाह का दीदार इन ज़ाहिरी आंखों से होगा या नहीं, यह एक मारकतुल आरा इख़्तिलाफ़ी बहस मोअतज़िला और इशारा वमा तरीद यह के दरमियान में है, लेकिन यह तमाम इख़्तिलाफ़ात नज़रियाती हैसियत रखते हैं, इन मसलों में जिनकी हैसियत अमली, माद्दी और महसूस थी मुसलमानों में कोई इख़्तिलाफ़ कभी पैदा नहीं हुआ और इसकी वजह यह थी कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की मुतवातिर अमली सुन्नत सबके पेशे नज़र थी और यह इस्लाम का सबसे बड़ा इम्तियाज़ी वस्फ़ था, रफ़अदैन, आमीन बिल जहर, वज़अ यद, किरआत ख़लफुल इमाम की बहसें अगर फ़रीक़ैन का गुलू और तास्सुब अलग कर दिया जाए तो सिर्फ़ अफ़ज़लियत की बहस रह जाती है जो कुछ ज़्यादा अहम नहीं।

यह हर मज़हब का उसूले कुल्ली है और ख़ास करके इस्लाम का और फ़ितरतन ऐसा ही होना भी चाहिए कि हर मज़हब का बेहतरीन अहद और दौर वह होता है जो ख़ुद साहिबे मज़हब का मुबारक ज़माना होता है और उसके बाद उसके जानशीनों और सोहबत याफ़्तों का। फिर धीरे–धीरे उसमें जुअफ़ आता जाता है और उसके मज़हब का क़वाम बिगड़ जाता है। अब अगर कोई शख़्स यह दावा करता है कि यह अस्ल मज़हब नहीं बल्कि वह है, कुरआन का यह हुक्म नहीं बल्कि वह है, तो उसका फ़र्ज़ यह है कि रसूल के मुबारक उहद में काम करने का जो तरीक़ा उसको नज़र आता है उसको अस्ल मज़हब का मेयार क़रार दे और जो चीज़ उस ज़माने में नज़र नहीं आती और बाद को वह शामिल हो जाती है उसको मज़हब से ख़ारिज यानि बिदअत क़रार दे, इस उसूल की बिना पर जो बिल्कुल खुला हुआ है हर उस शख़्स का जो इस्लाम के अस्ली पैकर की जलवा आराई का मुद्दई है और कुरआन की सही तालीम को आज दुनिया में पेश करना चाहता है, यह फ़र्ज़ है कि वह इस अस्लियत पर इस सही तालीम का ख़त व ख़ाल इस अहदे मुबारक की अमली ज़िन्दगी में दिखाए और यह बताए कि आज जो ग़लतियां उसको नज़र आती हैं, वह उस वक़्त को न थीं बल्कि बाद को इस्लाम में दाख़िल हो गईं हैं, मसलन यह बताए कइस ज़माने में सिर्फ़ दो वक़्त या तीन वक़्त की नमाज़ थी, बाद को जब बुख़ारी व मुस्लिम व अबूदाऊद मुरत्तब हुईं तो मुसलमानों में पांच वक़्तों की नमाज़ का रिवाज हुआ, पहले इस तरह नमाज़ पढ़ी जा रही थी, बाद को इसमें फ़ुक़्हा और मुहद्दिसीन ने यह इज़ाफ़ा कर दिया, अगर यह साबित नहीं हो सकता और यक़ीनन साबित नहीं हो सकता तो यही मानना पड़ेगा कि तो यही मानना पड़ेगा कि ख़ुद रसूलुल्लाह स0अ0व0 ने नऊज़ुबिल्लाह अपने ज़माने में अपनी वही को समझने में ग़लती की और अब उसको हिन्दुस्तान के अजमी अपनी मामूली सरफ़ी व नहवी लियाक़त से दुरुस्त कर रहे हैं, क्या कोई मुसलमान बल्कि इन्सान भी ऐसा अहमक़ाना दावा कर सकता है।

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह०)

(माहनामा मआरिफ़ : २/२४)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंकः १ जनवरी २०२२ ई० वर्षः १४

संरक्षकः हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो0 हसन नदवी

सुन्नत की अहमियत

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमायाः

(तुम अपने ऊपर मेरे और मेरे खुल्फ़ा-ए-राशिदीन मेहदीयीन के तरीक़े की पैरवी लाज़िम पकड़ना, उसको दांतों से मज़बूती से थामे रहना और दीन में नई बातों (बिदअत) से अपने आप को बचाना, इसलिए कि हर बिदअत गुमराही है)

(सुनन इब्ने माजाः 44)

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू0पी0.229001

प्रति अंक 15रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू0

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

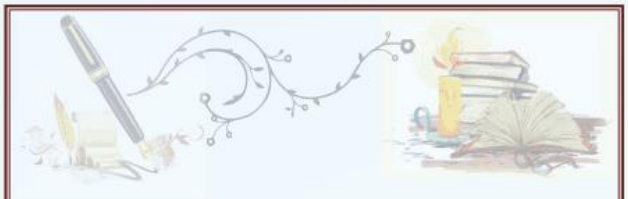

उम्र भर की बेक़रारी को ...

जिगर मुरादाबादी (रह०)

काम आख़िर जज़्बा-ए-बे अख़्तियार आ ही गया
दिल कुछ इस सूरत से तड़पा उनको प्यार आ ही गया

जब निगाहें उठ गईं अल्लाह री मेराज-ए-शौक़
देखता क्या हूं वह जान-ए-इन्तिज़ार आ ही गया

हाय ये हुस्न-ए-तसव्वुर का फ़रेब-ए-रंग व बू
मैं यह समझा जैसे वह जान-ए-बहार आ ही गया

हां सज़ा दे ऐ ख़ुदाए इश्क़ ऐ तौफ़ीक़-ए-ग़म
फिर ज़बान-ए-बेअदब पर ज़िक्र-ए-यार आ ही गया

इस तरह ख़ुश हूं किसी के वादा-ए-फ़रदा पे मैं
दर हक़ीक़त जैसे मुझको एतबार आ ही गया

हाय काफ़िर दिल की यह काफ़िर जुनूं अंगेज़ियां
तुमको प्यार आए न आए मुझको प्यार आ ही गया

दर्द ने करवट ही बदली थी कि दिल की आड़ से
दफ़अतन पर्दा उठा और पर्दादार आ ही गया

दिल ने एक नाला किया आज इस तरह दीवानावार
बाल बिखराए कोई मस्तानावार आ ही गया

जान ही दे दी जिगर ने आज पाए यार पर
उम्र भर की बेक़रारी के क़रार आ ही गया

इस अंक में:

हिजाज़ मुक़द्दस और अंदेशों के बादल.....3
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अरब क़ायदीन के नाम.....5
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी

सरवर-ए-कौनेन (स०अ०व०) से ख़िताब-ए-मुबारक.....6
हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

सच्चाई क्या है?.....8
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सब्र, नमाज़ और शहादत.....10
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

उश्र के शरई एहकाम.....12
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

मौलाना अली मियां का क़ुरआनी ज़ौक़.....14
मुहम्मद अरमुग़ान नदवी

लोकतन्त्र (Democracy).....17
सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

हरम रुस्वा हुआ पीर-ए-हरम की कमनिगाही से.....19
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादकीय

हिजाज़ मुक़द्दस और अंदेशों के बादल

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिजाज़ मुक़द्दस– जो हर मुसलमान के दिल की धड़कन है, जहां से दीन व ईमान मिला और जिससे हर ईमान वाले को जज़्बाती लगाव है, जो ऐन ईमान है, जिसकी हिफ़ाज़त हर ईमान वाले की ज़िम्मेदारी है, आज से सौ साल पहले वहां निज़ाम में कुछ ऐसी अबतरी थी कि अमन मफ़कूद था, जिहालत व नाख़्वान्दगी आम हो गयी थी, अक़ीदा तक महफूज़ा न था और जाहिलियत के दौर की बहुत सी रस्में रिवाज पा गईं थीं, इक़्तिसादी (आर्थिक) हालत और ख़राब थी, तवाएफुल मुलूकी का दौर दौरा था, यह ज़माना शरीफ़े मक्का का था और यह हुकूमत ख़ास तौर पर शरीफ़ हुसैन के दौर में बर्तानवी असर के ताबए हो गयी थी, अल्लाह का फ़ैसला हुआ और उसने आले सऊद को इस्लाहे हाल के लिए खड़ा किया, सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ बिन सऊद ने 1925ई0 में पूरे इलाक़े पर कन्ट्रोल किया, अमन व अमान क़ायम किया, इस्लाहे हाल का काम किया, ज़ुल्म का हाथ रोक दिया, शरीअत की हदों को नाफ़िज़ किया और सादगी और बराबरी की एक मिसाल क़ायम की, इसके साथ इक़्तिसादी परेशानियों का भी ख़ात्मा हुआ, ज़िन्दगी को ख़ुशगवार बनाने की कोशिश की गई।

मलिक अब्दुल अज़ीज़ के बाद उनके जानशीनों ने भी उन कोशिशों को जारी रखा, इसमें उतार–चढ़ाव आते रहे, लेकिन किसी न किसी तरह गाड़ी चलती रही, अलबत्ता तेल की फ़रावानी ने असबाबे ऐश पैदा कर दिये और मेहनतकश क़ौम को जब इससे साब्क़ा पड़ा तो वह उसके सैले रवां में बहने लगे, फिर अमरीका व यूरोप के रवाबित ने उसकी रफ़्तार और तेज़ कर दी और लोगों को संभालना मुश्किल हो गया।

मुफ़क्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह0) ने पहला सफ़र 1948ई0 में किया था, दूसरे सफ़र में जो 1950ई0 में हुआ, अपने बड़े भाई डॉ0 अब्दुल अली साहब को उन्होंने जो ख़त लिखा है, उससे उसकी अक्कासी होती है, मौलाना के क़लम से यह जुम्ले निकल गए: “तीन बरसों में खुला हुआ बदलाव महसूस होता है, बाज़ार से लेकर लोगों के दिमागों तक मग़्रिबी तहज़ीब, तिजारत व माशियत व अफ़कार व ख़्यालात के पंजे और ज़्यादा गड़ चुके हैं, जद्दा उतरते ही उसका एहसास होता है और जिस क़द्र हालात से वाकिफ़ियत होती है उतना ही उस हक़ीक़त का इन्किशाफ़ होता है, कोई नहीं जानता कि ख़ूबसूरत अरबी लिबास में कितने दिल व दिमाग़ ख़ालिस मग़्रिबी बन चुके हैं।”

इसके बाद हालात में उतार–चढ़ाव आता रहा, लेकिन हुकूमत को शरीअत का तर्जुमान किसी न किसी हद तक समझा जाता रहा, और उसी दौरान मलिक फ़ैसल को ज़मामे इक़्तिदार मिली, जिसको इत्तिहाद के अलमबरदार के तौर पर देखा गया और जो अपनी सही फ़िक्र की वजह से अमरीका की आंखों में कांटा बने रहे। आख़िरकार उनको शहीद कर दिया गया।

मुल्क की तरक़्क़ी और अवाम को राहत पहुंचाने के नाम पर जदीद वसाएल, तमद्दुद, आलाते तफ़रीह और सऊदी अरब को पड़ोसी मुल्कों के नक़्शे क़दम पर चलाने और मग़्रिबी तहज़ीब को अपनाने के बारे में पहले ही सोचा जा रहा था और उसकी तरफ़ क़दम बढ़ने लगे थे। मलिक फ़ैसल के बाद इसमें और तेज़ी आयी और धीरे–धीरे ममलकत ने अमरीका के आगे घुटने टेक दिये, लेकिन फिर भी शरीअत का एहतराम बाक़ी रहा और किसी न किसी हद तक इस पर अमल भी होता रहा।

ईराक़ व कुवैत की जंग के बाद जब अमरीकी फ़ौजों का वहां तसल्लुत हुआ उसके बाद हालात और बिगड़े और

शिकंजा और कसता गया, मलिक अब्दुल्लाह के आने के बाद कुछ तब्दीली की उम्मीद थी लेकिन उनको भी मजबूर कर दिया गया और हालात मज़ीद अबतर होने लगे, उनके इन्तिक़ाल के बाद मलिक सलमान जो दीनी ज़ेहन रखते थे और उनके मिज़ाज में सादगी भी थी उनसे तवक्क़ोआत वाबस्ता कर ली गईं लेकिन बड़ी आसानी के साथ उनको किनारे कर दिया गया और उनके बेटे मुहम्मद बिन सलमान ने ज़मामे इक़्तिदार अपने हाथों में ले ली और इस वक़्त वही सियाह व सफ़ेद के मालिक हैं। उनकी तालीम अमरीका में हुई और ग़लत सोहबतों ने उनको वहां पहुंचा दिया जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था, उन्होंने बहुत तेज़ी के साथ तब्दीलियां शुरू कीं और ममलकत को उस रास्ते पर डाल दिया जिससे हर–हर मुसलमान का दिल दुखा है।

मसला अब सिर्फ़ मनोरंजन के साधनों का नहीं रह गया है, अब खुलेआम बेहयाई के मनाज़िर हैं, हुकूमत उनको आगे बढ़ा रही है, अफ़सोस है कि लोग दीवानावार उन पर टूट रहे हैं। दावती व फ़िक्री कामों पर पाबन्दियां लगाईं जा रही हैं, मस्जिदों के मेम्बर से बजाए "इनकारे मुनकिर" के "इनकारे मारूफ़" का काम भी होने लगा है, इस्लामी शआएर का भी वह एहतराम न रहा, ग़ैरमुस्लिमों के लिए भी अब हुदूद बाक़ी नहीं रहे, वह बरसरे आम हर जगह आ–जा सकते हैं।

यही वह सऊदी हुकूमत है जिसने जामिया इस्लामिया क़ायम किया, जिससे दुनिया के मुसलमानों ने फ़ायदा उठाया, राब्ता–ए–आलम–ए–इस्लाम की बुनियाद डाली, जिसने आलमी सतह पर मुसलमानों के मसाएल से दिलचस्पी ली, मुफ़क्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी दोनों इदारों में बुनियादी तौर पर शरीक थे और बाज़ मीटिंगों में वहां की राय के ख़िलाफ़ हज़रत मौलाना ने राय दी और मौलाना की बात मानी गयी, उस दौर में वह उलमा वहां मौजूद थे जो साफ़ बात कहते थे, उनका एहतराम था, उनकी बात चलती थी, लेकिन आज वह कुछ नहीं, न जामिया इस्लामिया में वह बहार है, न राब्ता–ए–आलम–ए–इस्लामी अपने कामों में आज़ाद है और न उलमा को बोलने की आज़ादी है, न जाने कितने उलमा–ए–हक़ जेल की सलाखों के पीछे डाल दिये गए, सच्ची बात का इज़हार करना मुश्किल हो गया, वह दीनी व फ़िक्री किताबें जिन्होंने दिमाग़ों को सही रुख़ दिया था, लोगों में सही फ़िक्र और सही जज़्बात पैदा करने में जिनका बड़ा किरदार था, आज उन पर पाबन्दियां लगा दी गयीं, तब्लीग़ी जमाअत जो ख़ालिस इस्लाही जमाअत है, जिसका सियासत से दूर–दूर का वास्ता नहीं, मस्जिद के मेम्बरों से उसको बुरा–भला कहने के एहकामात जारी कर दिये गये और सबसे बढ़ कर यह कि ख़ालिस तौहीद का ऐलान करने वाली और उसकी दावत देने वाली ममलकत आज फिल्म स्टारों को बुलाकर नाच–गाना की अश्लील सभा का आयोजन करे और आख़िरी बात यह है कि उनके हाथों की यादगारें महफ़ूज़ की जाएं फिर मदीना मुनव्वरा से सिर्फ़ चन्द सौ किलोमीटर के फ़ासले पर वह शहर आबाद किया जा रहा है जिसमें कोई पाबन्दी नहीं, आख़िर बात कहां तक पहुंच गयी।

मौजूदा वली अहद ने सरे आम ऐलान किया कि हम मम्लकत को यूरोप का हिस्सा बना देंगे और हम उसके लिए पुरअज़्म हैं, लोगों को यूरोप जाने की ज़रूरत नहीं, वह तफ़रीह के लिए सऊदी अरब आएं, वह मक्का और मदीना और मक़ामात–ए–मुक़द्दसा जहां हाज़िरी ईमान ताज़ा करने के लिए और अल्लाह की बन्दगी के लिए होती थी, लोग वहां तफ़रीह के लिए जाएं, यक़ीनन यह ज़बाने नुबूव्वत से निकले हुए कलिमात हैं जो पूरे हो रहे हैं, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया थाः "एक ज़माने में हाल यह हो जाएगा कि मालदार तफ़रीह के लिए आएंगे, मुतवस्सित तबक़ा तिजारत के लिए आएगा और ग़रीब मांगने के लिए।" यह बात हक़ीक़त बनकर सामने आ रही है और उसके रास्ते हमवार किये जा रहे हैं।

यह वह सूरतेहाल है जिसने आलमे इस्लाम को बेचैन कर दिया, हर तरफ़ से सदाए इहतिजाज बुलन्द की गयी और मुख़्तलिफ़ मुल्कों के मुक़्तदर उलमा ने इस सूरत पर सख़्त तश्वीश ज़ाहिर की। नाज़िम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी साहब ने मुफ़स्सल मकतूब सिफ़ारत

ख़ाना के वास्ते से मुहम्मद बिन सलमान को इरसाल किया और इसमें अपने दुख का इज़हार किया, और इसमें हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी के हवाले से उन्हीं के उस्लूब में अपनी बात रखी।

अमरीका व यूरोप से यह मरुबियत और वहां की वह मुताफ़िन तहज़ीब जो ऊंची–ऊंची इमारतों और सफ़ेद चमड़ियों में बड़ी दिलकश मालूम होती है, उसकी जाज़िबियत ने ज़ेहन व दिमाग़ को ऐसा मसमूम कर दिया है कि आज वही तरक़्क़ी का मेयार है।

वह तहज़ीब जो हक़ीक़त में यूरोप का उगला हुआ निवाला है, मश्रिक़ी क़ौमें उसको निगलने के लिए तैयार हैं और वह मुक़द्दस जगह जहां से दुनिया को तहज़ीब व तमद्दुन की ख़ुराक़ मिली, अख़लाक़ व मुआशिरत का वह क़ीमती निज़ाम मिला, जिसने दुनिया को एक नई सिम्त बख़्शी और इन्सानों को इन्सानियत की हक़ीक़त मालूम हुई, आज वह सबकुछ भुलाकर दुनिया की मुलम्मा साज़ी का शिकार हो रही है। सच्ची बात यह है कि: इस आशिक़ी में इज़्ज़त–ए–सादात भी गई।

पूरी दुनिया इस वक़्त जिस सख़्त हालात से गुज़र रही है और तबई तौर पर मुसलमान सबसे ज़्यादा मुतास्सिर हैं, इस वक़्त ज़रूरत है बात को पूरी तरह समझने की और हत्तलइमकान हर तरह के इन्तिशार से बचकर इस्लाहे हाल की कोशिशों की और अपने दाएरा–ए–कार में जो हो सकता हो हर सतह से उसमें आगे बढ़ने की वरना दायरे तंग होते जाएंगे, हालात बिगड़ते जाएंगे, आज बड़े अफ़सोस की बात यह है कि ख़ुद हमें अपनी ख़ामियों का भी एहसास नहीं, हर मैदान में और हर गोशे में अगर कोशिशें की जांएगी तो किसी न किसी सूरत में उसके असरात वसीअ होंगे और क्या बईद है कि अल्लाह तआला इन कोशिशों की बदौलत वहां तब्दीली की शक्लें पैदा फ़रमा दें जो इस वक़्त हमारे अख़्तियार से बाहर हैं।

﴿وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا. وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ﴾

"और जो भी हमारे लिए जान खपाएंगे तो हम ज़रूर उनके लिए अपने रास्ते खोल देंगे और यक़ीनन अल्लाह बेहतर काम करने वालों ही के साथ है।"

अरब क़ायदीन के नाम

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

ऐ अहल–ए–अरब, ऐ अहल–ए–मक्का, ऐ रवादिमान–ए–हरम!

आपने अपने हाथों से इस मुक़द्दस घर को बनाया था कि हर घर से ऊंचा हो जाए और हर सनम व हैकल से ऊंचा दिखाई दे, आपके लिए कैसे जाएज़ हो सकता है कि फिर नाक़ाबिले ज़िक्र बुतों का सहारा लें, यहीं से आलमी इन्सानियत की आवाज़ उठी, जिसने इम्तियाज़ात के बुतों को तोड़कर नस्ली, वतनी, गुलामी के तौक़े सलासल को काटकर रख दिया, जिसने तारीख़ का रुख़ फेर दिया, जिसने हवादिस का मुंह मोड़ दिया, यहीं से वह रोशनी की किरन फूटी जो दुनिया में फैल गयी और जिसने इन्सानित के तने मुर्दा में रूहे ज़िन्दगी दौड़ा दी।

हमें हैरत है कि आप कैसे इस जाहिलियत की तरफ़ जा रहे हैं, जिसे हर होशियार क़ौम ने छोड़ दिया, यूरोप का उगला हुआ लुक़्मा उठाते हुए मैं आपको देखना नहीं चाहता।

अरब भाइयों के ग़लत मौक़िफ़ से हम अजीब कशमकश में हैं, ख़ास करके हिन्द व पाक अजीब घुटन में है, इन लोगों को क़ुरआन के सिवा कोई किताब शरीअत के अलावा कोई निज़ाम और रसूलुल्लाह के बराबर कोई इमाम व क़ायद नहीं जानते, उन्हें यह मौक़िफ़ बहुत खल रहा है, मैं आपसे रहम की अपील करता हूं कि हमें अपने मुल्कों में रुस्वा न करें, आप हमारी मदद नहीं कर सकते तो हमें कमज़ोर भी मत बनाइये, हमारे इस्लाम पर एतमाद, अपनी इस्लामियत पर इत्मिनान और तारीखें इस्लाम पर फ़ख़्र के मवाक़ेअ से मत रोकिए, हमारे इस पुराने यक़ीन को धचका न लगाइये कि आपने क़ौमों की जिहालत की बोझल जंजीरों से छुड़ाया था।

आलम-ए-अरबी का अलमिया: 106-107

सरवर-ए-कौनैन (स0अ0व0) से

किताब-ए-मुबारक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (रह0)

कुरआन मजीद में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से फ़रमाया गया कि अल्लाह के कलाम की सूरत में जो वही तुम्हें दी जा रही है, उसको लोगों के सामने पढ़िए, अल्लाह का इरशाद है:

﴿وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَن تَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَداً﴾

"और आपके परवरदिगार की किताब की आप पर जो वही हुई है, वह पढ़कर सुनाइये, उसकी बातें कोई बदल नहीं सकता और उसके सिवा आपको कहीं पनाह की जगह मिल नहीं सकती।" (सूरह कहफ़: 27)

यहां यह नहीं कहा गया कि इस वही को लोगों तक पहुंचा दीजिए, बल्कि फ़रमाया कि उसकी तिलावत कीजिए यानि पढ़ते रहिए, गोया इस चीज़ की तिलावत होनी चाहिए, ताकि उसके बाद में लोग सबक़ लें।

तिलावत के हुक्म के बाद फ़रमाया कि यह बात समझनी चाहिए कि अल्लाह तआला के कलिमात में तब्दीली नहीं है, यह नहीं समझना चाहिए कि अल्लाह ने ऐसा कहा है तो हो सकता है कि कल इसकी ज़रूरत न हो और अल्लाह ने यह सिर्फ़ आज ही के लिए कहा है, बल्कि जब अल्लाह तआला ने कहा है तो फिर वह क़यामत तक हमारे लिए दर्स है और क़ाबिले इस्तिफ़ादा है, अब उसमें कोई तब्दीली नहीं हो सकती। एक तरफ़ जहां उसके फ़रमान में कोई तब्दीली नहीं होती है, वहीं दूसरी तरफ़ यह भी है कि अल्लाह तआला के अलावा तुम्हें हिफ़ाज़त का कोई ठिकाना भी नहीं मिलेगा, यह सब जितने भी सहारे और ठिकाने हैं, जिनसे आदमी ख़ुद को ख़तरे व मुसीबत से बचाता है, यह सब बहुत कमज़ोर, मामूली और वक़्ती सहारे हैं, दुनिया के तमाम वसाएल अल्लाह ही ने पैदा किए हैं, दुनिया में जितने वसाएल और हिफ़ाज़त के तरीक़े हैं, वह सब अल्लाह ही के बनाए हुए हैं, ऐसा नहीं है कि वह ख़ुद-ब-ख़ुद हों, हम उनको अख़्तियार करें या न करें, हमें सोचना पड़ेगा, नहीं! बल्कि हमें उनको अख़्तियार करना है, इसलिए कि अल्लाह ने हमारे अख़्तियार करने के लिए ही बनाए हैं, दवाओं में जो असर है और उसके अलावा जो दूसरे वसाएल हैं, यह सब अल्लाह तआला ही के बनाए हुए हैं, यह ख़ुद से नहीं बने हैं, ख़ुद से जो चीज़ें बनी हैं उसकी हैसियत दूसरी होती है और जो किसी ने बनाई हो उसकी हैसियत दूसरी होती है। ज़ाहिर है जिस चीज़ को अल्लाह तआला ने बनाया है तो वह उसमें फेर-बदल भी कर सकता है, अल्लाह तआला उन चीज़ों को बेकार और बेअसर भी कर सकता है, इसलिए कि यह ख़ुद से नहीं हैं, बल्कि यह ताबए हैं और अल्लाह की बनाई हुई हैं। लिहाज़ा अगर तुम उन चीज़ों का सहारा लोगे तो वह कमज़ोर और नापाएदार सहारा होगा और यह हक़ीक़त अटल है कि अल्लाह तआला को छोड़कर तुम कोई और ठिकाना नहीं पा सकते।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को इशाअत-ए-इस्लाम की फ़िक्र बहुत ज़्यादा रहती थी, आप (स0अ0व0) के ज़हन में यह बात थी कि कुफ़्फ़ार में जो बड़े-बड़े सरदार हैं, बड़े-बड़े अमीर हैं, जिनका क़ौम पर असर है, अगर उनमें से कोई एक भी शख़्स मुसलमान हो जाता है तो पूरी एक जमाअत मुसलमान हो जाएगी, यानि जितने लोग भी उनके ज़ेरे असर होंगे, वह सब मुसलमान हो जाएंगे, इसीलिए रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को इस तबक़े के इस्लाम लाने की ख़ास फिक्र थी, ताकि इस्लाम जल्दी फैले, अल्लाह तआला ने इस ज़हनियत को मुख़ातिब करके रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से फ़रमाया:

﴿وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا

"और आप उन ही लोगों के साथ अपने आप को लगाए रखिए जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी ख़ुशनूदी की चाहत में और दुनिया की आराइश की ख़ातिर उनसे अपनी निगाहें न फेर लीजिए और उसकी बात न मानिये जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है और वह अपनी ख़्वाहिश के चक्कर में पड़ा है और उसका मामला हद से आगे बढ़ चुका है।" (सूरह कहफ़: 28)

आयत से पता चला कि जो बड़े-बड़े लोग आते हैं और अपनी क़ौम में बहुत असर रखते हैं, उनके इस्लाम

की फ़िक्र न कीजिए, हक़ीक़त में यह लोग अल्लाह तआला के बाग़ी हैं और उसकी नज़र में उनकी कोई क़ीमत नहीं है, दुनिया में चाहे उनकी कोई क़ीमत हो और जैसा असर व रसूख हो, लेकिन अल्लाह तआला के यहां उनका कोई असर नहीं है, लिहाज़ा ऐ नबी! आपको अपनी तबियत पर जब्र करना होगा।

आगे फ़रमाया कि उनके मुक़ाबले में जो लोग ईमान ला चुके हैं और वह मामूली दर्जे के लोग हैं, उनको आप यूं समझते होंगे कि यह ख़ुद तो ईमान ले आए हैं लेकिन उनका दूसरों पर कोई असर नहीं है और चूंकि यह लोग अब ईमान ले आए हैं, लिहाज़ा अगर उन लोगों की हम ज़्यादा फ़िक्र नहीं भी करते हैं तब भी यह तो हमारे साथ ही हैं, अलबत्ता यह लोग जिनके ईमान ले आने से समाज पर बहुत बड़ा असर पड़ सकता है, उन पर कोशिश व मेहनत की जानी चाहिए।

इसके बाद इरशाद हुआ कि जो लोग अल्लाह को सुबह–शाम पुकारते हैं और अल्लाह की रज़ा के तालिब हैं, आप अपनी तबियत को उन पर मजबूर कीजिए, यानि उनके साथ रहने और उन्हीं की तरफ़ तवज्जो करने पर अपने को मजबूर कीजिए और अपने इस तक़ाज़े को दबाइये कि हम किस तरह इन बड़े लोगों मुसलमान कर लें, जितना पैग़ाम देना हो उतना पैग़ाम दे दीजिए, जितनी बात कहनी हो उतनी कह दीजिए और उससे ज़्यादा की फ़िक्र न कीजिए, जिनके बारे में अल्लाह तआला ने तय कर दिया कि यह काफ़िर रहेंगे तो आप उनको मुसलमान नहीं बना सकते, आपका काम पैग़ाम पहुंचाना और कोशिश करना है, आप उन पर ज़्यादा मेहनत न कीजिए, बल्कि अपने को मजबूर कीजिए कि आप उन ग़रीबों और मामूली लोगों से वाबस्ता रहें जो अल्लाह को सुबह–शाम याद करते रहते हैं और दीन के काम में लगे रहते हैं।

उन्हीं लोगों के बारे में और फ़रमाया कि आप अपनी निगाहों को उन लोगों से न हटाइये, ऐसा न हो कि आपकी निगाहें उनसे हट जाएं, यानि उनको कमतर समझें, आप उनको हरगिज़ कमतर न समझिए, यह लोग अल्लाह की नज़र में बरतर हैं और जिनको दुनिया बरतर देख रही है, अल्लाह की नज़र में वह कमतर हैं, लिहाज़ा आपका रवैया भी यह होना चाहिए कि उनको आप बरतर समझें और उनको कमतर समझें, अलबत्ता जहां तक दावत देने की बात है वह ज़रूर दें, उनको भी दें और उनको भी दें, लेकिन इतना याद रहे कि उन लोगों से आपकी निगाहें नहीं हटनी चाहिएं, ऐसा नहीं होना चाहिए कि दुनिया की ख़ूबियां और दुनिया की जो पुरकशिश बाते हैं, उनकी तरफ़ आपकी निगाह चली जाए और पुरकशिश बातें क्या हैं? यानि जो लोग बाअसर हैं, जो दुनिया चला रहे हैं, जिनका लोगों पर असर है और जो ताक़तवर हैं, उनसे आदमी ज़्यादा उम्मीद क़ायम कर ले और जो लोग कमज़ोर हैं, उन पर आदमी को ज़्यादा तवक्कुल न हो, उसी के पेशेनज़र फ़रमाया गया कि यह दुनिया की जो ज़ीनत है यानि दुनिया में जो एक कशिश और असर है, उसकी तरफ़ आप बिल्कुल भी इरादा न फ़रमाइएं, उसके बाद दुनियावी एतबार से बड़े लोगों के बारे में फ़रमाया कि जिसका दिल हमने अपनी याद से हटा दिया है तो उसका दिल अल्लाह की याद से हट गया, यहां यह ध्यान रहे कि दिल अल्लाह तआला की इजाज़त ही से हटा है, चूंकि हर चीज़ अल्लाह करता है तो इस बात को अपनी तरफ़ ही मन्सूब करता है कि हमने जिसके दिल को अपनी याद से हटा दिया है, आप उसकी बात न मानिये।

आयत में जिस बात के मानने से मना किया जा रहा है, वह यह थी कि वह लोग कहा करते थे कि हम आपके पास आना चाहते हैं, लेकिन हमारे लिए एक मुश्किल यह है कि आपने अपने पास उन मामूली और घटिया लोगों को जमा कर रखा है, जिनको हम कुछ भी ख़ातिर में नहीं लाते हैं, तो हम आपके पास कैसे बैठें? पहले आप उन लोगों को हटाइये फिर हमसे बात कीजिए, ऐसी सूरत में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को भी ख़्याल होने लगा कि अगर इस तरीक़े से उन तक दीन की दावत पहुंच जाती है तो अगर कुछ वक़्त के लिए यह लोग क़रीब न रहें और अलग रहें तो बहुत बेहतर है। मज़कूरा आयत में इसी को मना किया गया कि उन लोगों से यह लोग बेहतर हैं, आप उनकी बात न मानिये और फ़रमाया कि जिसके दिल को हमने अपनी याद से हटा दिया है, जो दीन की बातें नहीं मान रहा है, आप उसकी फ़रमाइश कुबूल न कीजिए, वह कुछ भी कहा करें, लेकिन उनकी बात नहीं मानी जाएगी।

सच्चाई क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

तिजारत और रास्तगोईः

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि0) से रिवायत है रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः बेचने और ख़रीदने वाले को उस वक़्त तक बय (सौदा) ख़त्म कर देने का अख़्तियार है जब तक कि वह इस मजलिस से जुदा न हों और अगर वह सच बोले और अगर वह सच बोले और बय के ऐब व हुनर को बयान कर दिया तो उन दोनों के लेन–देन में बरकत होगी और अगर झूठ बोले और ऐब छुपाया तो उनके लेन–देन में बरकत ख़त्म कर दी जाएगी। (बुख़ारी)

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया कि जब तक मामला मुकम्मल न हो जाए या जब तक मजलिस ख़त्म न हो जाए, तब तक ख़रीदने और बेचने वाले दोनों को अख़्तियार हासिल है। यह शरीअत का अख़लाक़ी हुक्म बयान किया जा रहा है कि आदमी मामला कर रहा है, ख़रीद–फ़रोख़्त हो रही है, तो जब तक मामला मुकम्मल नहीं हो जाता, उस वक़्त तक दोनों को अख़्तियार है, ज़माना जाहिलियत में यह होता था कि किसी ने कोई चीज़ ली या किसी ने फेंक कर दे दी कि यह चीज़ लो हमने तुम्हें बेच दी, तो वह यह समझते थे कि यह बय हो गयी और मामला मुकम्मल हो गया, अब किसी को कोई अख़्तियार नहीं है, ज़ाहिर है इसमें ज़ुल्म भी होता था, जब कोई ज़बरदस्ती किसी के सर कोई चीज़ थोप दे और वह लेना न चाहता हो तो यह ज़ुल्म ही हुआ।

अख़्तियार का हक़

इस्लाम ने यह अख़्तियार दिया है कि जब मामला हो रहा हो और एक–दूसरे से बात चल रही हो तो दोनों को अख़्तियार है, जैसेः हम किताब बेचना चाहते हैं और सामने वाला शख़्स कहता है कि हम ख़रीदना चाहते हैं, लिहाज़ा अब वह ख़रीदने की नियत से किताब देख रहा है और मामला भी चल ही रहा है तो अभी इसको पूरा अख़्तियार है, वह चाहे तो ले और हम चाहें तो दें, या बीच में हम कह दें कि हां बेचने का इरादा तो था लेकिन अब नहीं है, ज़ाहिर है हमें पूरा अख़्तियार है, इसलिए कि हमारा मुआहिदा मुकम्मल नहीं हुआ है औ बेचने वाले का भी मुआहिदा मुकम्मल नहीं हुआ है, बल्कि अभी तो बात चल ही रही है, इसी तरह अगर किताब लेने वाला कहता है कि लाओ किताब देखते हैं, हो सकता है कि हम ख़रीद लें, फिर वह बोले कि हम नहीं ले पाएंगे और हमारे पास पैसे नहीं हैं, तो जब तक मामला मुकम्मल नहीं हो रहा है, उस वक़्त तक उन दोनों को अख़्तियार हासिल है, जबर बिल्कुल जाएज़ नहीं है, इसलिए कि जबर ज़ुल्म है, अगर बेचने वाला शख़्स ताक़तवर है तो वह उसके सर ज़बरदस्ती सामान थोपेगा कि नहीं तुम्हें यह चीज़ लेनी ही पड़ेगी, ऐसे में हो सकता है कि सामने वाला दबाव में आकर मजबूरन हां कर दे, इसलिए यह तरीक़ा जाएज़ नहीं है, जबर नहीं किया जा सकता बल्कि बेचने वाला अख़्तियार रखता है और ख़रीदने वाला भी अख़्तियार रखता है, वह चाहे ले और चाहे न ले।

कई बार ऐसा भी होता है कि ख़रीदने वाला ताक़तवर होता है और ज़बरदस्ती लेना चाहता है, वह किसी कमज़ोर बेचारे से कोई ज़मीन लेना चाहता है और उससे जाकर कहता है कि मियां! तुम्हारी फ़लां ज़मीन है तुम बेच दो, अब वह बेचारा हक्का–बक्का रह जाता है कि वह क्या करे? तो लेने वाला कहता है कि अरे बेच दो, हम जानते हैं कि यह रेट हैं लिहाज़ा इतने में हमें दे दो, ऐसे में ख़रीदने वाला अगर कोई बड़ा ज़मीनदार या ताक़तवर आदमी है तो बेचने वाला कमज़ोर आदमी उससे दबता है और परेशान होकर ज़मीन दे देता है, लेकिन यह जबर भी जाएज़ नहीं है, बल्कि बेचने वाले को अख़्तियार होना चाहिए, अलबत्ता उससे ख़रीदने वाला इतना कह सकता है कि इस ज़मीन के इतने रेट हैं, अगर तुम चाहो तो बेच दो, अब अगर वह यह जवाब दे कि इस वक़्त बेचना मुश्किल है तो मामला ख़त्म कर देना चाहिए, लेकिन अगर यह कहा कि मुश्किल कैसे है, तुम्हें ज़मीन देना ही पड़ेगी, तो इस्लाम में यह जबर जाएज़ नहीं है।

अख़्तियार के हुदूदः

मज़कूरा हदीस की अस्ल हक़ीक़त यही है कि इस्लाम में जबर को मना किया गया है और जब तक बय

मुकम्मल न हो जाए तब तक अख़्तियार दिया गया है, अलबत्ता जब बय मुकम्मल हो गयी और मामला मुकम्मल हो गया तो अब उसके बाद अख़्तियार ख़त्म, इसलिए कि अगर बाद में भी अख़्तियार दिया जाएगा तो झंझट खड़ा हो जाएगा। जो चीज़ बेच दी गयी खरीदने वाले ने ख़रीद ली और मामला ख़त्म हो गया और उन्होंने अपना काम भी शुरू कर दिया, फिर अब बाद में जाकर बेचने वाला कहे कि हमने ज़मीन ग़लत बेच दी, हम वापस लेना चाहते हैं, तो अब यह ठीक नहीं है, इसलिए कि वह बेच चुका है और दूसरा ख़रीद चुका है, अब मामला आगे बढ़ गया, लिहाज़ा अब अगर इस तरह की इजाज़त दी जाएगी तो सारा कारोबार फ़ेल हो जाएगा, लेकिन जब तक मामला मुकम्मल न हो उस वक़्त तक की इजाज़त है, इस पर जबर नहीं है, बेचने वाले को भी इजाज़त है और ख़रीदने वाले को भी इजाज़त लें

सच्चाई की बरकत

हदीस शरीफ़ में यह भी इरशाद है कि अगर बेचने और ख़रीदने वाला दोनों सच बोलते हैं और बात खोल–खोल कर बयान करते हैं तो अल्लाह तआला उनकी बय और उनके कारोबार में बरकत अता फ़रमाएगा और अगर वह छुपाते हैं और झूठ बोलते हैं तो अल्लाह तआला उनके इस कारोबार की बरकत को मिटा देगा।

वाक़्या यह है कि आदमी सामान के नुक़्स को छिपाता है, कपड़े वाला कपड़ा बेच रहा है, लेकिन अगर उसका कपड़ा कहीं से कट जाए तो थान का थान बेच देता है और अन्दर कटा हुआ कपड़ा छिपा ले जाता है, फिर बड़ा ख़ुश भी होता है कि हमारा काम बन गया, जबकि हक़ीक़त यह है कि काम बिगड़ गया। एक थान बेचकर कितना फ़ायदा कमा लेगा? हालांकि जब कारोबार की बरकत अल्लाह के यहां से उठा ली जाएगी तो क्या कमाएगा और उस कमाई में क्या बरकत होगी? लेकिन अफ़सोस की ईमान वाला इन्सान इस बात को नहीं जानता, इसीलिए यह हुक्म दिया गया है कि आदमी कारोबार करे, दुकान सजाकर बैठे और सच–सच बात करे, जो भी चीज़ बेच रहा है अगर उसमें कोई बुराई है, या कोई ऐब है तो उसको बयान कर दे कि इसमें यह ख़राबी है और इसके एतबार से यह चीज़ इतने की है।

अमानतदारी की मिसाल

तारीख़–ए–इस्लाम में अमानत व दयानतदारी के बेशुमार वाक़्यात हैं, एक किसी बड़े इमाम का वाक़्या है कि उन्होंने कोई चादर बेची, बाद में उनको अंदाज़ा हुआ कि वह चादर इतने दीनार की नहीं थी जितने की बेच दी, गोया बय मुकम्मल होने के बाद उन्हें यह एहसास हुआ कि हमने चादर ग़लत बेच दी, लिहाज़ा वह उस शख़्स के घर गए और उससे कहा कि तुमने इतने पैसे ज़्यादा दे दिए, हालांकि यह चादर उससे कम की थी, लिहाज़ा इतने दीनार वापस ले लो। यह अमानतदारी देखकर वह शख़्स हक्का–बक्का खड़ा रह गया कि बय मुकम्मल हो गयी थी और दाम भी मुनासिब थे, फिर आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? उन्होंने कहा कि मुझे इतने ज़्यादा पैसों पर इत्मिनान नहीं था।

शरई हुक्म

शरीअत का अस्ल हुक्म यह है कि आदमी जो कारोबार भी करे उसमें किसी को धोखा न दे, बल्कि जो बात है वह सीधी–सीधी बयान कर दे, लोग ज़मीन का कारोबार करते हैं, उसमें न जाने कितना धोखा देते हैं, ज़मीन झगड़े वाली होती है और जाकर कहते हैं कि इस पर कोई झगड़ा नहीं है, आप ले लीजिए कोई मसला नहीं है, लेकिन एक सीधा इन्सान इस ज़मीन को लेकर मुसीबत में पड़ जाता है, शरई नुक़्ता–ए–नज़र यह अमल हराम है, अगर इस तरह कोई शख़्स लोगों को फसाता है तो जाएज़ नहीं है, बल्कि जो बात है उसे खोलकर बयान करना चाहिए कि यह किस तरह की ज़मीन है, जैसेः नुज़ूल की ज़मीन है, या उसके हिस्सेदार हैं, उसके काग़ज़ात कैसे हैं, वह काग़ज़ात जाली तो नहीं हैं, ग़रज़ कि जो बात भी है वह सच्ची–सच्ची बयान करना चाहिए, अगर बयान नहीं की तो यह अल्लाह के यहां पकड़ और गुनाह की बात है, इससे कारोबार में बरकत मिट जाएगी, ज़ाहिर में इन्सान यही समझता रहेगा कि लाखों कमा लिए, लेकिन यह लाखों काम नहीं आएंगे, वह दुनिया में चाहे उनसे कुछ दिन फ़ायदा उठा ले, लेकिन आख़िरत में कुछ फ़ायदा नहीं हो सकता, इसीलिए यह हुक्म है कि आदमी जो कारोबार कर रहा है, चाहे वह किसी भी तरह का हो, बस मामला साफ़–साफ़ होना चाहिए।

सब्र, नमाज़ और शहादत

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

शरीयत के हुक्म पर अमल करने के दौरान जो मुश्किलें पेश आएं, उनका मुक़ाबला नमाज़ और सब्र से करने का कुरआन मजीद में हुक्म है, इरशाद है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اسْتَعِيْنُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصَّابِرِيْنَ☆ وَلَا تَقُوْلُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاء وَلَكِن لَّا تَشْعُرُوْنَ﴾

"ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो नमाज़ और सब्र के ज़रिए (अल्लाह से) मदद चाहो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है, जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे जाते हैं उनको मुर्दा न कहो, हक़ीक़त यह है कि वह ज़िन्दा हैं लेकिन तुम्हें एहसास नहीं होता।"

(सूरह बक़राः 153–154)

जब बनी इस्राईल पर अल्लाह की नेमतों का तज़किरा हो रहा था उस वक़्त उनको भी उन्हीं दो बुनियादी चीज़ों के ज़रिये अल्लाह से मदद चाहने का तज़किरा हुआ थाः ﴿وَاسْتَعِيْنُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ﴾ लेकिन बनी इस्राईल की तारीख़ पर निगाह डालें तो नज़र आएगा कि उनमें सब्र नाम की कोई चीज़ थी ही नहीं, ख़ुद हज़रत मूसा ने उनसे कहा था :

﴿قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ☆قَالُوا أُوذِيْنَا مِن قَبْلِ أَن تَأْتِيَنَا وَمِن بَعْدِ مَا جِئْتَنَا﴾

"जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो, ज़मीन बिलाशुब्हा अल्लाह की है, वह जिसे चाहता है उसका मालिक बना देता है, अस्ल आक़िबत तो मुत्तक़ीन के लिए है।" क़ौम (उसके जवाब में) कहने लगे "मूसा तुम्हारे आने से पहले भी हम तकलीफ़ में थे और तुम्हारे आने के बाद भी।"

अल्लाह की तरफ़ से ज़बरदस्त एहसान के तौर पर मन व सलवा उतरने लगा तो कहने लगे: ﴿لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ﴾ "हम इस एक ही खाने पर सब्र नहीं कर सकते" यह उनकी उमूमी तारीख़ है, अलबत्ता उनमें सब्र व इस्तिक़ामत वाले हज़रात भी पैदा होते रहे, अल्लाह ने उनको इमामत से नवाज़ाः ﴿وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا﴾ "हमने उनमें पेशवा व इमाम बनाए जो हमारे हुक्म से हिदायत का काम करते थे जब उन्होंने सब्र किया।" यहां सब्र इस्तिक़ामत के मफ़हूम में है, इसी तरह यह भी सच है कि बनी इस्राईल ने फ़िरऔन की तरफ़ से बर्दाश्त कीं, वह मज़लूम थे, इस मज़लूमाना सब्र के नतीजे में अल्लाह ने उनकी निजात का फ़ैसला फ़रमायाः

﴿وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَى عَلَى بَنِيْ إِسْرَائِيْلَ بِمَا صَبَرُوا﴾

"आपके रब का बेहतरीन फ़ैसला बनी इस्राईल के हक़ में पूरा हुआ जब उन्होंने सब्र किया।" यहां उनकी मज़लूमी का बयान है, बाक़ी जब राहे हक़ में दिखाने का मौक़ा आया तो उनमें न नमाज़ रही न सब्र की कैफ़ियात रहीं, उन्हीं के बारे में इरशाद हैः

﴿فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ﴾

"उनके बाद (यानि उन अम्बिया और उनके सच्चे मुत्तबिईन के बाद) कुछ ऐसे ना ख़लफ़ जानशीन हुए जिन्होंने नमाज़ को ज़ाए कर दिया और ख़्वाहिशात के पीछे पड़ गए।"

इससे मालूम हुआ कि नमाज़ को ज़ाया करना, बेनमाज़ी होना है और ख़्वाहिशात की पैरवी करना सब्र को छोड़ देना है।

बनी इस्राईल की पूरी तारीख़ बयान करके मिल्लत–ए–इब्राहीमी की अमानत व नेअमत इस उम्मत के सुपुर्द करके उनको यह नसीहत की जा रही है कि यह रास्ता निस्बतन पुर मशक़्क़त है, लेकिन इसका ईनाम भी बहुत बड़ा है, इसलिए नमाज़ व सब्र के ज़रिए मदद हासिल करते रहना, सब्र चाहे मज़लूमाना हो या इस्तिक़ामत से लबरेज़, दोनों सूरतों में अल्लाह तुम्हारे साथ रहेगा, भले किसी का साथ मिले न मिले, बुनियादी तौर पर सब्र ताअत पर जमे रहने, मआसी से बचते रहने और मुसीबतों को बर्दाश्त करने का नाम है, जिसे अरबी

में "الصبر على الطاعات، الصبر عن المعاصى، الصبر على الشدائد" (इताअत पर सब्र, गुनाहों पर सब्र, मुसीबतों पर सब्र) कहते हैं, अल्लाह से वफ़ादारी के अहद में कौन कितना सच्चा है, यह मालूम करने के लिए अल्लाह की तरफ़ से मुख़्तलिफ़ आज़माइशें होती रहती हैं, वही अस्ल में जमने और इस्तिक़ामत का वक़्त होता है, आम हालात में इन्सान जद्दोजहद करता है, जो इज्तिमाई तौर पर जिहाद फ़ीसबीलिल्लाह और इन्फ़िरादी व ज़ाति तौर पर हो तो मुजाहिदा कहलाती है, वह सब सब्र में दाख़िल है, इसी तरह मज़लूमी की हालत में ज़ुल्म सहने के बावजूद अपने दीन पर वाबस्ता रहने की कैफ़ियत को भी सब्र कहा जाता है, यह इम्तिहान अल्लाह की तरफ़ से अक्सर व बेशतर ज़रूर होता है, अच्छों का इम्तिहान ज़रा सख़्त होता है और आम मुसलमानों का कुछ नम्र, इसमें अल्लाह यह चाहता है कि सब खरे उतरें:

﴿أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ﴾

"क्या तुम्हारा ख़्याल है कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे जबकि अभी अल्लाह ने यह मालूम नहीं किया कि तुममें से जिहाद–मुजाहिदा करने वाले कौन हैं और उनको भी वह जान लेगा जो सब्र करने वाले हैं।"

"ان الله مع الصابرين" जो लोग किसी भी हालत में उल्टे पांव वापस नहीं पलटते हैं, अपने अस्ल मक़सद से कभी इन्हिराफ़ नहीं करते, अल्लाह के लिए बड़े से बड़े फ़ायदे से महरूम या बड़े से बड़े नुक़सान को बर्दाश्त करने को गवारा करते हैं, वह साबिर हैं, वह हमेशा अल्लाह को अपने साथ पाते हैं, फिर वह हर नफ़ा–नुक़सान से बालातर होकर शहादत की ज़िन्दगी बसर करते हैं या फिर शहादत की मौत को गले लगाते हैं, हक़ीक़त में ज़िन्दगी की आबरू उन्हीं के दम–क़दम से क़ायम है, ज़िन्दगी का मज़ा भी यही लोग पाते हैं, मौत से पहले भी और मौत के बाद भी, इसीलिए अल्लाह के रास्ते में जान का नज़राना पेश करने वालों को मुर्दा कहने से मना किया गया है, वह शहीद हैं और शहीद हमेशा ज़िन्दा होता है, अलबत्ता यह ज़िन्दगी दुनियावी ज़िन्दगी की तरह नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से बतौर ईनाम मिलने वाली ख़ास पुरलुत्फ़ ज़िन्दगी है जिसका तसव्वुर हम नहीं कर सकते, बाक़ी दुनियावी लिहाज़ से उन पर मौत का हुक्म लगाया जाएगा, उनकी मीरास तक़सीम होगी, रूह उनकी भी निकल जाती है, जिस्म उनका भी बेजान हो जाता है, जिस तरह आम मरने वालों को होता है, यहां अदबन और एहतिरामन उनको मुर्दा न कहने का हुक्म है और यह बताने के लिए भी कि आलमे बरज़ख़ में उनको जिस तरह ख़ास ज़िन्दगी नसीब होती है, वह आम मरने वाले मोमिनीन से बढ़कर होती है। वल्लाहु आलम

"ان الله مع الصابرين" के मअन बाद इस आयत के लाने से यह बात मालूम होती है कि तुम जिस राह के मुसाफ़िर हो वहां जान का नज़राना पेश करने की भी ज़रूरत आ सकती है, शहादत की ज़िन्दगी कभी–कभी शहादत की मौत तक भी ले जा सकती है, उसे मौत न समझना वह ख़ुद एक पुरबहार ज़िन्दगी है, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इरशाद फ़रमायाः शोहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के अन्दर होंगी, जन्नत में जहां चाहेंगी चरती फिरेंगी, फिर उन क़ंदीलों में आकर बसेरा करेंगी जो अर्श के नीचे लटक रहीं हैं। अल्लाह उन पर नज़र फ़रमाएगा और पूछेगा; तुम क्या चाहते हो? वह कहेंगेः परवरदिगारे आलम! हम और क्या चाहें, तूने हमें वह दिया है जो अपनी मख़लूक़ में से किसी को नहीं दिया, अल्लाह की तरफ़ से फिर पूछा जाएगा, जब वह देखेंगे कि जब तक अल्लाह से कुछ मांगा न जाएगा उनसे पूछा जाता रहेगा तो वह कहेंगे; परवरदिगारे आलम हम यह चाहते हैं कि तू दोबारा हमें दुनिया में भेज दे, ताकि हम तेरे रास्ते में लड़कर एक बार फिर शहीद हो जाएं, शहादत का सवाब देखकर वह यह तमन्ना करेंगे। (वाज़ेह रहे कि यहां तमन्ना हसरत के लिए नहीं बल्कि लुत्फ़ व इज़्ज़त के तौर पर होगी) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएगा मैंने यह बात लिख दी है कि वह दोबारा दुनिया में नहीं लौटेंगे, यानि दोबारा उनको दुनियावी आज़माइश में मुब्तिला नहीं किया जाएगा, दोबारा शहादत से वह जिस मज़ीद सवाब की तमन्ना करेंगे, एक ही शहादत से उनकी वह सारी तमन्नाएं पूरी कर दी जाएंगी, इसके लिए बार–बार शहीद होने की ज़रूरत नहीं होगी। इस सहीह रिवायत से पता चलता है कि शोहदा के लिए आलमे बरज़ख़ में से जन्नत के कुछ मज़े हासिल होने शुरू हो जाएंगे, बाक़ी भरपूर जन्नत क़यामत क़ायम होने के बाद मिलेगी, कुछ इससे मिलती–जुलती ज़िन्दगी आम अहले ईमान को भी हासिल होगी। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इरशाद फ़रमायाः मोमिन की रूह एक परिन्दा बनकर जन्नत के दरख़्तों को चरती फिरेगी और एक तर्जुमा यह भी है कि जन्नत के दरख़्तों के फलों को खाएगी।

उश्र के शरई एहकाम

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

जिस तरह सोना, चांदी, अमवाले तिजारत और नक़दी पर ज़कात वाजिब है, उसी तरह ज़मीन की पैदावार पर भी ज़कात वाजिब है और चूंकि ज़मीन पर होने वाली पैदावार पर वाजिब होने वाली ज़कात उश्र (दसवां हिस्सा) या निस्फ़ उश्र (बीसवां हिस्सा) होती है, इसलिए इसका नाम ही उश्र रख दिया गया है।

फिर जिस तरह ज़कात फ़र्ज़ है, उसी तरह उश्र भी फ़र्ज़ है, इसका हुक्म कुरआन मजीद में भी आया है और हदीसों में भी आया है, चुनान्चे अल्लाह तआला का इरशाद हैः "ऐ ईमान वालों! ख़र्च करो अपनी पाकीज़ा कमाई में से और उस पैदावार में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली है।" (सूरह बक़राः 2678) मुफ़स्सिरीन ने इससे उश्र मुराद लिया है।

(अहकामुल कुरआन लिलहब्सास)

दूसरी जगह इरशाद हैः "और फ़सल काटते वक़्त उसका हक़ दो।" (अलइनआमः 141)

यहां भी मुफ़स्सिरीन ने उश्र या निस्फ़ उश्र मुराद लिया है और रसूलुल्लाह (स0अ0व0) का इरशाद हैः "जो ज़मीन बारिश और चश्मों से सैराब हो या (जड़ों के ज़रिए ख़ुद से) सैराबी हासिल कर लेती हो उसमें उश्र (दसवां हिस्सा) वाजिब है और जो ऊंट (या दूसरे मस्नूई ज़राए जैसे ट्यूबवेल वग़ैरह के) ज़रिये सींची जाए तो उसमें निस्फ़ उश्र (बीसवां हिस्सा) है।"

(बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात : 1483)

किस ज़मीन में उश्र होगा?

उश्र सिर्फ़ उश्री ज़मीन पर वाजिब होता है, ख़राजी ज़मीन पर वाजिब नहीं होता, उश्री उन ज़मीनों को कहा जाता है जो मुसलमानों ने काफ़िरों से फ़तेह करके हासिल की हो और उसे बतौर माले ग़नीमत तक़सीम कर दिया गया हो, या मुसलमान हाकिमों ने बतौर जागीर दी हो और उस वक़्त से अब तक मुसलमानों के क़ब्ज़ों में चली आ रही हो।

चुनान्चे ख़राजी ज़मीनों पर उश्र नहीं होता और ख़राजी ज़मीनें वह हैं जिनको मुसलमानों ने फ़तेहकरके हासिल तो किया हो लेकिन उनको बतौर एहसान मालिको के पास ख़िराज मुक़र्रर करके छोड़ दिया हो, या वह ज़मीन जिसको मुसलमान ने काफ़िर से ख़रीदा हो। (फ़तावा ख़ानियाः 1/270–271)

इस ज़मीन को मुसलमान काफ़िर से ख़रीद भी ले तब भी इस पर उश्र वाजिब नहीं होता।

(तातार ख़ानियाः 7/132)

जहां तक हिन्दुस्तान की ज़मीनों की हैसियत का ताल्लुक़ है तो बाज़ उल्मा सबको ख़िराजी क़रार देते हैं, इसलिए कि ख़ात्माए ज़मीनदारी के बाद हुकूमत ने ज़मीन ज़मीनदारों से ज़ब्त कर ली थी और काश्तकारों व ज़मीनदारों पर तक़सीम कर दी थी, लिहाज़ा वह काफ़िरों से हासिल होने वाली ज़मीन के हुक्म में गई है और उस पर न उश्र लाज़िम होगा न ख़िराज, इसलिए कि सरकारी मिल्कियत वाली ज़मीनों में से कोई भी चीज़ वाजिब नहीं होती। (किताबुल मसाएलः 2/166, बहवाला फ़तावा महमूदिया व शामी)

लेकिन हज़रत थानवी (रह0), मुफ़्ती शफ़ीअ (रह0), मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह और जम्हूर उल्मा के नज़दीक जो ज़मीनें काफ़िरों से ख़रीदी जाएं उन पर ख़िराज वाजिब है, बक़िया मुसलमानों की तमाम ज़मीनों पर उश्र वाजिब है, बल्कि एहतियात इसमें है कि ग़ैर मुस्लिमों से ख़रीदी गई ज़मीनों का भी उश्र निकाल दिया जाए। फ़िक़ एकेडमी की चन्द तजावीज़ (छठा फ़िक़्ही सेमिनार) मुलाहिज़ा होः

1– हिन्दुस्तान की ज़रई ज़मीनों के मुताल्लिक़ यह ख़्याल कि न उनमें उश्र वाजिब है न ख़िराज, दुरुस्त नहीं है।

2– हिन्दुस्तान की ज़मीनें नीचे दी गई सूरतों में इत्तिफ़ाक़ राय से उश्री हैं:

अ– मुसलमान हुकूमत की तरफ़ से मुसलमानों को अता की गईं ज़मीनें जो अब तक मुसलमानों के पास चली आ रही हैं।

ब– जिस इलाक़े के लोग मुस्लिम हुकूमत के क़ायम होने से पहले ख़ुशी से मुसलमान हो गए हों और उनकी ज़मीनें अभी तक मुसलमानों ही के पास चली आ रही हैं।

स– जो ज़मीनें लम्बे अर्से से मुसलमानों के पास हैं और तारीख़ी तौर पर उनका ख़िराजी होना साबित नहीं है।

3– जो ज़मीनें ग़ैरमुस्लिम हुकूमत या अफ़राद से किसी मुसलमान को हासिल हुई हों, उनके बारे में सेमिनार में शरीक होने वालों की राय मुख़्तलिफ़ हैं, बहुत से लोगों के नज़दीक हिन्दुस्तान की तमाम ज़मीनें उश्री हैं और बहुत से लोगों के नज़दीक इस सूरत में ख़िराज वाजिब है, ताहम इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि इहतियात तमाम ही ज़मीनों में उश्र अदा करने में है। (नए मसाएल: 72–73, और देखिए: जवाहरुल फ़िक़्ह: 2/266, जदीद फ़िक़्ही मसाएल: 1/231, फ़तावा रहीमिया: 9/1110)

बात का ख़ुलासा यह कि ज़मीन उश्री हो तब तो उश्र निकालना वाजिब है ही, उश्र होना मश्कूक हो या ख़िराजी होना तय हो तब भी अक्सर उल्मा के नज़दीक एहतियात उश्र निकालने में है। वल्लाहु आलम

किस ज़मीन का दसवां हिस्सा निकालना है और किसमें बीसवां हिस्सा वाजिब है?

उश्र निकालने के लिए शरीअत ने कोई निसाब तय नहीं किया है, किसी के पास ज़मीन कम हो या ज़्यादा, पैदावार कम हो ज़्यादा, ज़मीन का मालिक आक़िल–बालिग़ हो या मजनून और नाबालिग़ अगर मुसलमान है तो हर तरह की पैदावार पर उश्र वाजिब होगा, सिवाए घास और सरपत जैसी उन चीज़ों के जिनको नफ़ा हासिल करने के लिए नहीं लगाया जाता, हत्ता कि अगर नफ़ा हासिल करने के लिए सरपत और घास जैसी चीज़ों को लगाया जाए तो उस पर भी उश्र वाजिब होगा, इसलिए अगर नफ़ा हासिल करने के लिए बांस या यूकेलिप्टस के पेड़ लगाए तो भी जब भी उनको काटे उन पर उश्र वाजिब होगा।

(शामी: 2/53–55, बदाए: 2/173)

और सिंचाई अगर बारिश या नदी वग़ैरह के पानी से बग़ैर मेहनत किए हो जाती हो तो दसवां हिस्सा (उश्र) वाजिब होगा, लेकिन अगर सिंचाई के लिए रक़म लगती हो या मेहनत पड़ती हो जैसे ट्यूबवेल वग़ैरह से सिंचाई की जा रही हो बीसवां हिस्सा वाजिब होगा यानि आधा उश्र। (शामी: 2/54–55)

किराए पर दी हुई ज़मीन का उश्र:

किराए पर दी हुई ज़मीन का उश्र मुफ़्ता बिही क़ौल के मुताबिक़ किराए पर लेने वाले पर होगा।

(शामी: 2/60)

बटाई वाली ज़मीन का उश्र:

अगर बटाई वाली ज़मीन मुसलमान की है और मुसलमान ही ने ली है तो दोनों पर उनके हिस्से में उश्र वाजिब होगा। (बदाए: 2/174)

आरियत पर ली हुई ज़मीन का उश्र:

अगर ज़मीन किसी मुसलमान को आरियत पर दी तो उसका उश्र आरियत पर लेने वाले किसान पर होगा और अगर किसी ग़ैरमुस्लिम को दी तो पैदावार का उश्र ज़मीन देने वाले पर होगा। (शामी: 2/60)

ख़र्चे घटाए नहीं जाएंगे:

खेती पर खाद और दवाओं पर भारी ख़र्च आता है, लेकिन उस पर होने वाले इन ख़र्चों को काटा नहीं जाएगा, कुल पैदावार पर उश्र होगा, इसी तरह गन्ने और सब्ज़ियों वग़ैरह जैसी तमाम तरह की पैदावार और फलों पर उश्र होता है, उनको लाने–ले जाने पर जो ख़र्च आता है, उन ख़र्चों को भी घटाया नहीं जाएगा।

(बदाए: 2/185)

इस्तेमाल से पहले उश्र निकालना ज़रुरी है:

पैदावार में उश्र निकालने से पहले उश्र निकालना चाहिए और अगर बेच लिया है तो उसकी क़ीमत से पहले उश्र निकाले फिर इस्तेमाल करे।

(शामी: 2/58)

मौलाना अली मियां का कुरआनी ज़ौक़

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

"जाइये दौलत–ए–कुरआन मुबारक हो"
(हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास कांधलवी रह0)

मुफ़क्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह0) का ख़ास मौज़ूअ कुरआन मजीद था, जिसका ज़ौक़ उनके रग व रेशे में सरायत किया हुआ था, इसकी वजह यह थी कि उन्हें अरबी ज़बान का वह ख़ुदादाद ज़ौक़ हासिल था, जो सिर्फ़ अहले में भी उनको नसीब होता है जिनमें फ़ितरी और वजदारी ज़ौक़ मोजज़न हो, हज़रत मौलाना ने अपने इस ज़ौक़ को वसीअ व अमीक़ मुताले से जिला बख़्शा था, इस पर मुस्तज़ाद यह कि उन्हें ऐसे बाज़ौक़ और सालिहीन की सोहबत मयस्सर आयी जिनकी ज़िन्दगियां कुरआन मजीद की अमली तस्वीर की मुंह बोलती तस्वीर थी, मौलाना के दिल में कुरआन मजीद की मुहब्बत का सबसे पहला नक़्श तो उसी वक़्त क़ायम हो गया जब कमसिनी में वालिदा–माजिदा की आग़ोश में दर्द व सोज़ में डूबी उनकी तिलावत सुना करते थे, फिर दिल की इस नर्म ज़मीन में बोए गए बीच को परवान चढ़ने का ज़र्रीं मौक़ा तब मिला जब उन्होंने शेख़ ख़लील–ए–अरब (रह0) के सामने ज़ानुए तिलमिज़या किया और बाक़ायदा अरबी ज़बान की तालीम का आग़ाज़ हुआ, शेख़ ख़लील–ए–अरब कुरआन मजीद का महज़ पाकीज़ा ज़ौक़ ही नहीं बल्कि ज़ाएक़ा भी रखते थे, वह जब भी तिलावत करते तो आवाज़ गुलूगीर हो जाती, बिलख़ुसूस कुछ मुन्तख़ब रुकूआत को बड़े जोश और लुत्फ़ से पढ़ते थे, हज़रत मौलाना को भी अपने महबूब उस्ताद से इस ज़ौक़ का वाफ़िर हिस्सा मिला था, वह अपने मुताला–ए–कुरआन की सरगुज़िश्त में लिखते हैं:

"अरब साहब का पुरदर्द और पुर तासीर लहजा गोया कान में गूंज रहा है, अरब साहब से सुनते–सुनते हमको भी यह रुकूअ अच्छे मालूम होने लगे और इस तरह से कुरआन मजीद से एक ज़ौक़ी ताल्लुक़ पैदा हुआ।" (मेरी इल्मी व मुतालआती ज़िन्दगी: 8)

लाहौर के क़याम में हजरत मौलाना अहमद अली साहब लाहौरी (रह0) की दर्सी मजालिस और उनके फ़ैज़–ए–सोहबत से हज़रत मौलाना (रह0) ने ख़ूब इस्तिफ़ादा किया, हज़रत मौलाना ख़ुद फ़रमाते हैं कि हज़रत लाहौरी का दर्स बड़ी मेहनत और क़वी खुलासा का तालिब होता था, हर रुकूअ का खुलासा और उसके माख़ज़ याद करना पड़ते थे, फिर नये दर्स से क़ब्ल उसको मौलाना सिंधी के ही मुक़र्रर किये हुए अल्फ़ाज़ में सुनाना भी ज़रूरी था, इस ज़माने में हज़रत मौलाना की कुरआन मजीद पर ग़ैर मामूली मेहनत का नतीजा यह हुआ कि आप हज़रत लाहौरी के मुमताज़ तरीन तलबा में शुमार हुए और जब दिल्ली से ख़्वाजा अब्दुल हयि फ़ारूक़ी, हज़रत लाहौरी की दावत पर उनके तलबा की कापियां चेक करने आए तो उन्होंने हज़रत मौलाना को इम्तियाज़ी नम्बरात दिए जो तक़रीबन सत्तर या उससे कुछ ऊपर थे, लेकिन दीगर रुफ़क़ा ने इस पर एक एहतिजाजी जलसा किया, यहां तक कि हज़रत लाहौरी ने बनफ़्स–ए–नफ़ीस कापियां चेक करने का ऐलान किया, बक़ौल हज़रत मौलाना:

"क़िस्मत की बात कि जब उन्होंने कापियां देखीं तो सब शुरका–ए–इम्तिहान के नम्बरों में थोड़ा इज़ाफ़ा किया और मेरे नम्बर बढ़ाकर अट्ठानवे कर दिये।" (कारवान–ए–ज़िन्दगी: 1/133)

हज़रत मौलाना ने देवबन्द के क़याम में शेख़ुल इस्लाम हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (रह0) से भी कुरआन मजीद के मुश्किल मक़ामात के हल में ख़ुसूसी रुजूअ फ़रमाया। अलावा अज़ी अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0) की सोहबत में रहकर उनके मुताला–ए–कुरआन से भी भरपूर इस्तिफ़ादा किया।

हज़रत मौलाना (रह0) ने अपने इल्मी व मुतालआती सफ़र में मुख़्तलिफ़ वक़ीअ तफ़ासीर से नफ़ा उठाया, मसनलः शेख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया (रह0) की बाज़ मुख़्तसर तफ़सीरें, मौलाना हमीदुद्दीन फ़राही के रसाएल, तफ़सीर–ए–जलालैन, बग़वी की मआलिमुल तन्ज़ील और ज़मख़्शरी की कशाफ़ वग़ैरह, फिर जब दारुल उलूम नदवतुल उलमा में मसनद–ए–दर्स संभाली तो उस ज़माने में अल्लामा आलूसी की रुहुल मआनी, अबूहय्यान की अलबहरुल मुहीत और अल्लामा रशीद रज़ा की तफ़सीर अलमिनार का भी मुताला किया और बाद में तफ़सीर–ए–तिबरी से ख़ुसूसी दिलचस्पी भी क़ाबिल–ए–ज़िक्र है।

जदीद मालूमात व तहक़ीक़ात के तनाज़ुर में क़ुरआनी ऐजाज़ के मुख़्तलिफ़ शोबों को बेनक़ाब करने में हज़रत मौलाना ने अब्दुलमाजिद दरियाबादी (रह0) की तफ़सीर–ए–माजिदी से भी ख़ूब इस्तिफ़ादा किया, और उर्दू तर्जुमे व हवाशी में हज़रत शाह अब्दुलक़ादिर देहलवी (रह0) और मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी (रह0) के तराजिम व हवाशी को हज़तर मौलाना बड़ी क़द्र की निगाह से देखते थे।

हज़रत मौलाना का यह इम्तियाज़ी वस्फ़ है कि वह अपने इल्मी व मुतालआती सफ़र में किसी ख़ास तर्ज़े फिक्र या मख़सूस नज़रिये से मुतास्सिर नहीं हुए, बल्कि अरबी ज़बान में महारत की वजह से क़ुरआन मजीद का ऐजाज़, वजदानी व ज़ौक़ी तौर पर ख़ुद महसूस होने लगा, इसके नतीजे में यह हुआ कि उन्होंने बराहेरास्त क़ुरआन मजीद के मआनी व मफ़ाहीम समझने की कोशिश की और उनकी ज़िन्दगी का क़ुरआन से वही ताल्लुक़ हो गया जो जिस्म को रूह से होता है, मुताला–ए–क़ुरआन की सरगुज़िश्त में उनके यह अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा हों:

"अरबी ज़बान व अदब के इश्तिग़ाल का यह फ़ैज़ कुछ कम फ़ैज़ नहीं कि इससे क़ुरआन मजीद का सही ज़ौक़ पैदा हो और उसके सारे अदबी ज़ख़ीरे में निरालापन और अलबेलापन साफ़ नज़र आने लगा।" (कारवान–ए–ज़िन्दगी: 10)

हज़रत मौलाना ने दारुल उलूम नदवतुल उलमा के मुख़्तलिफ़ दरजात में तक़रीबन दस साल क़ुरआन मजीद का दर्स दिया, यह दर्स वहबी सलाहियत और ख़ुदादाद ज़हानत का हक़ीक़ी आईनादार होता था जिसमें फ़िक्र व लिल्लाही और ख़ानदानी बुज़ुर्गों की खुसूसियात साफ़ तौर पर झलकती थीं, दौराने दर्स हज़रत मौलाना का रब्त–ए–आयात व तर्ज़े इस्तदलाल, क़ुरआन मजीद पर उनके हद दर्जा एतमाद और गहरेक शुग़फ़ का राज़ साफ़ तौर पर बयान करता था।

हज़रत मौलाना (रह0) ने शहर–ए–लखनऊ में "इदारा–ए–तालीमात–ए–इस्लाम" और "मरकज़ दावत व तब्लीग़" में सालों साल दर्से क़ुरआन का सिलसिला जारी रखा, यह दर्स दानिशवर तबक़े के लिए इन्तिहाई मुफ़ीद व मुअस्सिर होते थे, जिनमें क़ुरआनी आयात को मौजूदा मुआशिरे पर मुन्तबिक़ करके ऐसे बयान किया जाता था जैसे उन आयात का नुज़ूल उसी मक़सद के लिए हुआ है, यही वजह है कि उन दुरूस में तालीम याफ़्ता तबक़े की एक बड़ी तादाद बड़े जोश व ख़रोश से शरीक होती थी, हज़रत मौलाना लिखते हैं:

"दर्स के वक़्त अगर लखनऊ में किसी दीनी ज़ौक़ रखने वाले मुसलमान अफ़सर या आला ओहदेदार को तलाश किया जाता तो शायद जवाब यही मिलता कि वह इस वक़्त इदारा तालीमाते इस्लाम के दर्से क़ुरआन में होंगे।" (कारवान–ए–ज़िन्दगी: 1/274)

हज़रत मौलाना के ज़ौक़–ए–क़ुरआनी का यह आलम था कि वह स्टेज पर ख़ाली ज़हन बैठे होते फिर जब जलसे का आग़ाज़ तिलावत–ए–क़ुरआन से होता तो उन्हीं आयात की रोशनी में अपनी पूरी बात कहते और ऐसे नुकात बयान करते जिनकी तरफ़ मुतक़द्दिमीन या मुताख़्ख़िरीन की निगाह तक न गई हो, मसलन:

﴿وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاء بَعْضٍ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ﴾

इस आयत की तशरीह में हज़रत मौलाना ने बयान किया कि: यहां इन्सानी और आदिलाना भाईचारा क़ायम करने का हुक्म न उन रूमियों को है जो आधी दुनिया के मालिक थे और न ईरानियों को हैजिन्होंने रोमन इम्पायर के साथ दुनिया पर क़ब्ज़ा जमा रखा था बल्कि यह ख़िताब सहाबा की मुठ्ठी भर जमाअत से है जिससे पता चलता है कि "उम्मत–ए–मुस्लिमा की हैसियत और वज़न "क़द्र व क़ीमत" है, न कि "क़द्र व क़ामत" इसकी हैसियत और इसका मक़ाम अपने ईमान, अक़ाएद, मकारिमे अख़लाक़, बेदार ज़मीर और जिस्म में सरायत किए हुए शऊर व विजदान और अक़्ल व तदब्बुर पर असर डालने वाली इस बेताब व बेचैन रूह से है जो उसको अता की गयी।" (कारवान–ए–ज़िन्दगी: 3/102)

﴿بَلِ ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُم مِّنْهَا عَمُونَ﴾

इस आयत में हज़रत मौलाना ने आयत ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ का तर्जुमा "उनका इल्म पंक्चर हो गया है" किया है, इसके बाद अहले मग़्रिब की तहक़ीक़त और उनके इल्म से मुताल्लिक़ यह नुक़्ता बयान किया है कि:

"वह इल्म जो अच्छा–ख़ासा चल रहा था, इत्मिनान से सफ़र तय करके आया था, जिसने अक़्लियात पर, तबईयात पर, रियाज़ियात पर और मा बादुत्तबियात तक में अपनी फ़िक्र की जौलानी और ज़हन की ताबानी दिखाई, वही इल्म जब वाजिबुल वजूद की ज़ात व सिफ़ात तक पहुंचा तो ऐसा मालूम होता है कि अचानक पहिये से

हवा निकल गई।" (कारवान–ए–ज़िन्दगीः 2/223–224)

﴿وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ﴾ एक मौक़े पर हज़रत मौलाना ने इस आयत का शाने नुज़ूल बयान करते हुए फ़रमाया कि जब हज़राते अंसार को इस्लाम के मुताल्लिक़ इत्मिनान हो गया तो उन्होंने यकसू होकर अपनी तिजारत की तरफ़ मुतवज्जे होने का इरादा किया, जिस पर यह आयत नाज़िल हुई और मुसलमानों को तम्बीह की गई कि जब दीन को तुम्हारी मदद और जांनिसारियों की ज़रूरत है तो ऐसे वक़्त में लम्हा भर की ग़फ़लत भी समे क़ातिल है, इसके बाद हज़रत मौलाना ने इसी आयत से इस्तिदलाल करते हुए मौजूदा हालात के तनाज़ुर में फ़रमायाः

"मुसलमानों का ज़हन इन्फ़िरादी है इज्तिमाई होना चाहिए, यानि मिल्लत के तक़ाज़ों को देखना चाहिए कि अगर हर शख़्स सिर्फ़ अपने–अपने तक़ाज़ों को देखने लगे तो दीन की ख़िदमत कहां से होगी।"

(रूदाद–ए–चमनः 232)

इसी तरह हज़रत मौलाना ने अपनी तक़रीरों और दर्से कुरआन की महफ़िलों में सूरह बक़रा की आयतः ﴿مَا تَعْبُدُونَ مِن بَعْدِي﴾ के ज़िम्न में नई नस्ल के ईमान की हिफ़ाज़त के मुताल्लिक़ दिल का जो दर्द बयान किया है वह पूरी मिल्लत के लिए एक सुनहरा पैग़ाम है, एक मरतबा फ़रमायाः

"यही हर मुसलमान की शान होनी चाहिए, अपने बारे में भी हमेशा डरता रहे, अपने ईमान की ख़ैर मनाता रहे, इसीलिए दुआ करता रहे कि हमारा ईमान सलामत रहे, हमारा ख़ात्मा ईमान पर हो और अपनी औलाद के बारे में भी इत्मिनान हासिल कर ले, यह हमारी ज़िन्दगी में भी और हमारे बाद भी अल्लाह को छोड़कर ग़ैरुल्लाह के आस्ताने पर सर नहीं झुकाएगी।" (तोहफ़ा–ए–मश्रिकः 50)

वाक़्या यह है कि हज़रत मौलाना को मुसलसल कुरआनी इश्तिग़ाल के सबब ऐसा ज़ाएक़ा नसीब हुआ था कि वह कुरआनी फ़हम की दौलत से बख़ूबी मालामाल थे, उनकी तमाम तहरीरें और तक़रीरें कुरआनी बसीरत पर दलालत करती हैं। जिसमें ग़वासी करके वह बेशक़ीमत लाल व गहर चुनकर लाते थे और बयान करते थे, वह अपने ज़ौक़ का ख़ुद यूं इज़हार करते हैंः

"मैं कुरआन मजीद का अदना तालिब इल्म हूं, इसके बाद जो कुछ भी अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी इसमें कुरआन मजीद का सबसे बड़ा हिस्सा है।"

जिन लोगों ने मेरी नाचीज़ तहरीरें और तस्नीफ़ें देखी हैं, उनको अंदाज़ा होगा कि मेरी तहरीरों का ताना–बाना कुरआन मजीद ही से तैयार होता है, मैंने सबसे ज़्यादा कुरआन से मदद ली है और फिर तारीख़ से और मैं तारीख़ कुरआन मजीद की ही तफ़सीर समझता हूं।"

(दावत–ए–फ़िक्र व अमलः 188–189)

तारीख़ और क़ौमों के उरूज व ज़वाल की दास्तान हज़रत मौलाना महबूब मौजूअ था, मगर हक़ीक़त यह है कि उन्होंने तारीख़े आलम को भी कुरआन मजीद ही की रोशनी में पढ़ा और समझा था, जिसका अंदाज़ा उनके उस्लूबे बयान और तर्ज़े इस्तदलाल से साफ़ तौर पर होता है, यही वजह है कि उन्होंने आम मुअर्रिख़ीन की रविश से हटकर उससे वह रहनुमा उसूल माख़ज़ किये जो दावती मैदान के लिए हमेशा मशअले राह रहेंगे, उन्होंने ख़ुद इस बात का एक जगह ज़िक्र किया हैः

मैंने कुरान मजीद को इस नज़र से पढ़ा है कि वह एक ज़िन्दा किताब एक बोलता हुआ मुरक्का और आइना है। जिसमें अफ़राद भी अपने चेहरे देख सकते है कौमे भी अपनी सूरतें देख सकती हैं और कौमों, सल्तनतों,सभ्यताओं की उन्नतियां तथा उनके परिणाम भी इस किताब में देखे जा सकते है।

कुरान मजीद से हजरत मौलाना के आखिरी दर्जे के इश्क का अन्दाजा उनके इन शब्दों से होता हैः

जब कुरान मजीद में आदमी का जी लगने लगता है तो इंसान की लिखी हुई चीजों से जी घबराने लगता है। इंसानी किताबे मानवीय लेख इंसानी तकरीरें पस्त और बेकार मालूम होने लगती है। साहित्यकारों तथा हकीमों तथा चिन्तकों की बातें बच्चों जैसे नजर आती है। जिनमें कोई गहराई मालूम नही होती

हज़रत मौलाना का कुरान में तदब्बुर और तफ़क्कुर और जौक़ व शौक़ का यही वह जज़्बा था जिसकी बिना पर उम्मत के बड़े बड़े लोग उनकी इस मुमताज़ सिफ़त के तारीफ़ करने वाले और कदरदान थे । बानिये तब्लीग़ हज़रत मौलाना मोहम्मद इलियास कांधलवी ने एक मौके पर अपने ख़ास अंदाज़ में संबोधित करके फ़रमाया : जाइयें दौलते कुरान मुबारक हो।

लोकतन्त्र

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन (Abraham Lincoln) के शब्द हैं:

"Government of the people, by the people and for the people."

अर्थात (लोकतन्त्र) शासन जनता से, जनता के द्वारा तथा जनता के लिए (होता है)

लोकतन्त्र का शाब्दिक अर्थ "जनता का शासन" है। इसकी उत्पत्ति यूनानी शब्द से हुई है जिसमें (Demos) का अर्थ जनता होता है और (Kratos) का अर्थ शासन होता है।

लोकतन्त्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है जहां जनता को क़ानून के निर्माण में शामिल किया जाता है, या जनता अपने प्रतिनिधी तय करती है जो यह काम कर सकें। यह प्रतिनिधी उस चुनाव प्रणाली (Voting System) के द्वारा चयनित होकर आते हैं जिसमें जनता का हर व्यस्क व्यक्ति अपने पसंदीदा व्यक्ति के हक़ में वोट करके क़ानून बनाने तथा क्षेत्र की सेवा के लिए शासन में अपना प्रतिनिधी बनाने का प्रयास करता है। फिर जिसके हक़ में जनता का सबसे अधिक वोट जाता है उसको सत्ता प्राप्त होती है तथा वह जनका के प्रतिनिधित्व का हक़दार हो जाता है। भारत तथा बहुत से देशों में यही लोकतान्त्रिक प्रणाली प्रचलित है।

पांचवी सदी (ई0पू0) में यह व्यवस्था कुछ यूनानी शहरों में ख़ास तौर पर एथेंस में चलन में थी। पुराने एथेंस के बाद रोमन इम्पायर भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर स्थापित हो गया यद्यपि इस लोकतान्त्रिक व्यवस्था में राय देने का हक़ केवल आज़ाद मर्द के लिए ही ख़ास था और शासन करने का अधिकार ख़ास लोगों के पास ही रहता था, इस लोकतान्त्रिक व्यवस्था में जनता बहुत से मूलभूत अधिकारों से भी वंचित थी।

फिर उन्नीसवीं सदी के अन्त था बीसवीं सदी के आरम्भ में यूरोप में सफ़रेज मूवमेंट (Suffrage Movements) ने ज़ोर पकड़ा और फिर धीरे–धीरे वहां "लोकतान्त्रिक शासन" की बुनियाद पड़ने लगी जिसे पश्चिमी लोकतन्त्र (Western Democracy) के नाम से बयान किया जाता है।

पश्चिम ने जिस लोकतान्त्रिक व्यवस्था से दुनिया को परिचित कराया उसने अपने उसूलों और दावों की बदौलत बहुत जल्द लोकप्रिय हो गया और फिर पश्चिमी साम्राज्य से आज़ाद होने वाले देशों ने उसी व्यवस्था को अपने यहां प्रचलित किया।

लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था हर व्यक्ति की उन्नति का दावेदार है और अपने दावों को आकर्षित तथा स्वीकार योग्य बनाने के लिए उसने निम्नलिखित चार अहम मानवीय आधारों पर ज़ोर दिया है:

1– क़ानून (Law): लोकतान्त्रिक शासन क़ानूनी हैयित पर स्थापित होती है, इसमें केवल इसी जमाअत को शासकीय काम–काज संभालने का अधिकार होता है जो जनता के क़ानूनी और आज़ाद व इंसाफ़ से की गई वोटिंग से सत्ता में आती है। ऐसी हुकूमत अपनी क़ानूनी हैसियत रखती है और इसी से जनता की भलाई की उम्मीद लगाई जा सकती है।

लेकिन नोट करने की बात यह है कि वोटिंग के द्वारा शासन करने वाली पार्टी बहुसंख्य का वोट प्राप्त करने में नाकाम रहती है और चूंकि हुकूमत बनाने वाली पार्टी को बहुसंख्य का समर्थन प्राप्त नहीं होता इसलिए जनता अधिकतर जनता हुकूमत से नाख़ुश रहती है। जैसे: 60 प्रतिशत चुनाव में हिस्सा लेती है तथा वोट कम से कम दस अलग–अलग पार्टियों में बंट जाता है, लिहाज़ा जीतने वाली पार्टी को दस–पंद्रह प्रतिशत वोट ही प्राप्त होते हैं यानि 85 से 90 प्रतिशत लोग उस सरकार के समर्थन में नहीं होते।

2– इन्साफ़ (Justice): लोकतान्त्रिक शासन न्याय पर स्थापित होता है। यह मामला उसी समय मुमकिन हो

सकता है, जब जनता एक ऐसे माहौल में जीवन गुज़ारें जहां सभी लोगों के साथ एक सा मामला किया जाए और जनता को मान–सम्मान दिया जाए। यानि किसी ख़ास वर्ग या व्यक्ति को ख़ास सुहूलत दी जाए तो उस पर सवाल होना चाहिए और समाज को चाहिए कि वह लोगों को सलाहियत की बुनियाद पर बढ़ावा दे और ईनाम लियाक़त के आधार पर दे, न कि उनकी हैसियत व रुत्बे के आधार पर।

लेकिन वास्तव में राजनीतिक पार्टियां चुनाव प्रणाली में किसी ख़ास धर्म, वर्ग या ज़ात का वोट प्राप्त करने के लिए बंटवारे की राजनीति करती हैं तथा इस आधार पर न्याय का समाज से ख़त्म हो जाना स्वाभाविक है। अतः जिन लोगों से सत्ता पक्ष को वोट मिलता है और जिस जगह से उनके उम्मीदवार कामयाब होते हैं उन जगहों और लोगों को ख़ास दर्जा दिया जाता है और बाक़ी सबको नज़र अंदाज़ किया जाता है।

3– आज़ादी (Liberty): लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में आज़ादी हर नागरिक का अधिकार है। हमारे देश के संविधान में भी अपने नागरिकों को छः अधिकार दिए गए हैं:

1. समानता का अधिकार
2. स्वतन्त्रता का अधिकार
3. शोषण के ख़िलाफ़ अधिकार
4. धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार
5. सांस्कृतिक व शैक्षिक अधिकार
6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार

यह बात ख़ास तौर पर ध्यान देने के लाएक़ है कि एक ओर लोकतन्त्र का यह दावा है कि इसमें लोगों को हर प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त है तथा मानव निर्मित कोई दूसरी व्यवस्था ऐसी नहीं है जिसमें मनुष्य अमन व शांति महसूस करता हो, मगर इस व्यवस्था की बुनियादी कमी यह भी है कि इसमें प्रतिनिधियों को यह अधिकार प्राप्त होता है कि जिस संविधान पर तमाम नागरिकों की स्वतन्त्रता आधारित होती है, उस संविधान को बदल भी सकते हैं, यानि कि अगर शासन में शामिल लोग यह चाहें कि किसी ख़ास धर्म, वर्ग या सम्प्रदाय से वोट का अधिकार छीन लिया जाए, किसी जगह से उनका मालिकाना हक़ समाप्त कर दिया जाए, उनकी धार्मिक आज़ादी ख़त्म कर दी जाए या उनके सांस्कृतिक आयोजनों पर पाबन्दी लगा दी जाए, तो वह पार्ल्यामेंट में एक बिल पास करके अपनी योजना को धरातल पर उतार सकते हैं।

4– ताक़त (Power): आज़ाद लोकतन्त्र में संविधान में कोशिश की जाती है कि सत्ता की ताक़त सीमित, पादरर्शी तथा ग़ैर पक्षपातपूर्ण हो।

लोकतान्त्रिक संविधान के अनुसार भारत में राष्ट्रपति राज्य का मुखिया होता है, प्रधानमंत्री सरकार का मुखिया होता है और राष्ट्रपति प्रधानमंत्री के मशवरे पर फ़ैसला करता है। भारत ''राज्यों का संघ'' है, यानि भारत में फ़ेडरल शासन प्रणाली हैं, जिसमें केन्द्र तथा राज्य सरकार के बीच अधिकारों का बंटवारा होता है तथा न्यायप्रणाली स्वतन्त्र होती है किन्तु एमरजेंसी की स्थिति में यह यूनिटरी का रूप धारण कर लेती है यानि एमरजेंसी में राज्य सरकार को भंग कर दिया जाता है और हालात के संभलने तक सारे अधिकार केवल केन्द्र सरकार के होते हैं।

लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में न्यायपालिका बिल्कुल स्वतन्त्र होती है, किसी का व्यक्तित्व, धर्म या पार्टी उस पर प्रभाव नहीं डाल सकती है। लेकिन यह भी वास्तविकता है कि शासन, उसके अधीन पुलिस व खुफ़िया संस्थान और हुकूमत का मीडिया उसका साथ न दे। इस तरह लोकतन्त्र में न्यायपालिका शासन के दबाव में रहती है या यूं कहा जाए कि फ़ैसला लेने में जज जो केवल एक इन्सान होता है, हुकूमत और उसके वोट बैंक की राय को मद्दे नज़र रखता है।

वास्तविकता स्वीकार की जाए तो लोकतन्त्र में अवामी अक्सरियत (बहुसंख्यक) ख़ौफ़नाक जानवर बन जाते हैं जो रोहन्गिया और वीगर (चीन) जैसे अल्पसंख्यकों को पूरी तरह से तबाह–बर्बाद कर देता है और कुछ संभव नहीं कि हमारे देश में भी आसाम जैसी सूरतेहाल पूरे देश को निगल जाए।

खुलासा यह कि इन तमाम भष्ट्राचार व नाइंसाफ़ी का हल किसी मानव निर्मित व्यवस्था में नहीं है और जिस हल के लिए दुनिया परेशान व चिंतित है वह हल केवल इस्लामी व्यवस्था में है, यह खुदाई निज़ाम हर धर्म, वर्ग और बिरादरी के मानने वालों के लिए इन्साफ़ का हामिल, हर हुकूमत के लिए मार्गदर्शक और इख़्तिलाफ़ का आसान व कुदरती हल है।

हरम रुस्वा हुआ पीर-ए-हरम की कमनिगाही से

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

शाह सलमान ने जनवरी 2015 में सत्ता संभाली तो रियासत से बाहर ''शहज़ादा मुहम्मद'' को शायद ही कोई जानता था, शाह सलमान ने पहले शाही फ़रमान में अपने उत्तराधिकारियों का ऐलान किया। शहज़ादा मकरन को हटाकर शहज़ादा मुहम्मद बिन नाएफ़ को उत्तराधिकारी घोषित किया और अपने बेटे शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान के लिए नए पद का निर्माण किया और उसे ''नाएब वली अहद'' (उप-उत्तराधिकारी) नामज़द कर दिया। शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान को नाएब वली अहद के अलावा उप प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री, शाही दरबार का इंचार्ज और सऊदी तेल कम्पनी आरामको (ARAMCO) के बोर्ड का चेयरमैन भी बनाया गया।

मार्च 2017 में नाएब वली अहद शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान ने अमरीकी राष्ट्रपति ट्रम्प से वाइट हाउस में लंच पर मुलाक़ात की। यह एक असाधारण मुलाक़ात थी, जिसका नतीजा 21 जून को सामने आया, जब शहज़ादा मुहम्मद बिन नाएफ़ को न सिर्फ़ तमाम पदों से हटाया गया उत्तराधिकारी के पद से भी हटाकर मुहम्मद बिन सलमान को उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया और नाएब वली अहद का फ़रमाइशी ओहदा भी ख़त्म कर दिया गया।

उत्तराधिकारी बनते ही मुहम्मद बिन सलमान ने शाह सलमान तक अहम लोगों की रसाई सीमित कर दी और बिना किसी के शिरकत के सत्ता के मालिक बन बैठे।

मुहम्मद बिन सलमान की ज़हनी व फ़िक्री तरबियत पश्चिमी सांचे में हुई थी। अरबी लबादे में एक ख़ालिस पश्चिमी शहज़ादे ने जब सत्ता पर क़ब्ज़ा हासिल किया, पश्चिमी सोच व नज़रिये की सरहदें ख़ुद ब ख़ुद मिटती चली गयीं और पूरे देश में अश्लीलता तथा नग्नता को रिवाज पाने का अवसर मिल गया।

मुहम्मद बिन सलमान ने क़ौम के सामने ''विज़न 2030'' नाम से एक नया प्रोजक्ट पेश किया जिसका मक़सद सऊदी अर्थव्यवस्था का तेल पर निर्भरता कम करना तथा टूरिज़्म के नाम पर देश में अश्लीलता तथा अय्याशी पर आधारित आयोजन के द्वारा विदेशियों को आकर्षित करके मुद्रा एक्सचेंज करना है जैसे संयुक्त राष्ट्र अरब (यूएई) कर रहा है। इस प्रोजेक्ट के लिए रेगिस्तान में आधे खरब डालर की लागत से बड़ा शहर बसाने की भी योजना बनाई है जहां औरतों और मर्दों को एक-दूसरे से मिलने-जुलने की मुकम्मल आज़ादी होगी। आश्चर्यचकित करने वाली बात यह है कि सऊदी अरब की इस बेहयाई को मीडिया ''रोशन ख़्याली'' का नाम दे रहा है।

सऊदी अरब दुनिया भर में मुसलमानों के लिए सबसे पवित्र धरती की हैसियत रखता है, ख़ासकर हिजाज़-ए-मुक़द्दस के ख़ित्ते में बैतुल्लाह और मस्जिद-ए-नबवी भी स्थित है, इसके अलावा भी इस्लामी इतिहास से जुड़े सैकड़ों पवित्र स्थल हैं, यही कारण है कि सऊदी अरब में अश्लीलता व नग्नता तथा दूसरे बेकार के कामों से हमेशा सख़्ती से निपटा जाता रहा है, लेकिन पिछले कुछ अर्से से सऊदी अरब में ऐसी शर्मनाक घटनाएं हो रही हैं जिनके कारण मुस्लिम उम्मत अत्यधिक चिंतित है।

हिजाज़-ए-मुक़द्दस पर सुधार के नाम से जुए के अड्डे बनाए जा रहे हैं, माडलिंग की सरपरस्ती की जा रही है, नाच-गाने की महफ़िलें सजाई जा रही हैं, नग्नता, अश्लीलता तथा बेहयाई को बढ़ावा दिया जा रहा है। दूसरे शब्दो में सऊदी अरब अपनी विशेषता खोता जा रहा है और हरम व मस्जिद-ए-नबवी के कस्टोडियन और ख़ादिमुल हरमैन होने की वजह से

उसमें जो मिसाली शख़्सियत और क़ायदाना हैसियत थी ख़त्म होती जा रही है। "अम्र बिल मारूफ़" के बजाए "अम्र बिल मुनकरात" पर ताक़त ख़र्च हो रही है। पश्चिमी सभ्यता तथा पश्चिमी मूल्यों को बिना किसी सवाल के क़ुबूल किया जा रहा है बल्कि उनको रिवाज दिया जा रहा है।

समन्दर के किनारों पर ऐसे तफ़रीहगाहें बनायी जा रही हैं जहां और मामूली और आधे–अधूरे कपड़े पहनकर जा सकेंगी। परदा जो एक इस्लामी पहचान थी वह सऊदी हुक्मरानों की अक़्लों पर पड़ गया है, पूरी क़ौम मौज–मस्ती में डूब गयी है। हद यह है कि हिजाज़–ए–मुक़द्दस को जिन उलमा–ए–दीन ने इस्लामी शिक्षाओं की खुल्लम–खुल्ला धज्जी उड़ने पर विरोध किया उनके ख़िलाफ़ मुक़द्दमे किए गए और गिरफ़्तारियों का सिलसिला शुरू कर दिया गया।

सऊदी अरब में अब बड़े पैमाने पर आमोदपूर्ण आयोजन देखने को मिलते हैं। इन आयोजनों के बहुत से दृश्य अब भी असाधारण लगते हैं। पिछले चार सालों में देश के 13 राज्यों में से 9 राज्यों में लगभग 44 सिनेमाहाल खुल चुके हैं। एक ऐसा देश जहां कुछ सालों पहले तक पब्लिक प्लेस पर म्यूज़िक मना थी वहां अब रात भर तेज़ आवाज़ में म्यूज़िक फेस्टिवल होता है और लोगों की बड़ी संख्या उसमें शामिल होती है। अतीत के सऊदी अरब में ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता था।

मुहम्मद बिन सलमान क़रीबी लोगों का कहना है कि देश इस समय बड़े बदलाव से गुज़र रहा है। यह बदलाव अब भी अपने शुरूआती दौर में है। बदलाव की इस रफ़्तार को अभी और तेज़ करने की ज़रूरत है ताकि सऊदी शहज़ादे के "विज़न 2030" योजना की पूर्ति हो सके। जब तक यह बदलाव 'नार्मल' नहीं बन जाते तब तक लोगों को सब्र से काम लेना होगा।

हिजाज़–ए–मुक़द्दस की अज़मत और उससे ईमानी ताल्लुक़ की बुनियाद पर हर साहबे ईमान उन हुक्मरानों की कार्यवाहियों पर परेशान भी है और हैरत में भी है।

हैरानी की बात यह है कि अश्लीलता व बेहयाई का जो तूफ़ान मग़्रिब ने आज़ादी व रोशन ख़्याली के नाम पर बरपा किया था और जिसे शायद आज सऊदी शासकों ने उनकी तरक़्क़ी का राज़ समझा है। इसकी तबाही के अमली तर्जुबे के बाद मग़्रिब के पोप व पादरी नहीं बल्कि हुकूमती व सियासी हल्के तक उससे सख़्त परेशान हैं। अश्लीलता व नग्नता की न मिटने वाली भूख के नतीजे में पश्चिमी क़ौमों के हर वर्ग में व्यापारिक सोच, मुनाफ़ाखोरी और मौक़ा परस्ती की कैफ़ियत पैदा है और लूट–खसोट का ऐसा बाज़ार गर्म है कि अख़लाक़ का मसला बिल्कुल निगाहों से ओझल हो चुका है और पूरा पश्चिमी समाज हलाकत व तबाही की ओर तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। पिछले साल सत्ताइस देशों पर आधारित यूरोपीय यूनियन की पार्ल्यामेंट में "कमेटी आन वूमेन राइट्स एंड जेन्डर इक्वेलिटी" की ओर से एक रिपोर्ट पेश की गई जिसमें पश्चिमी समाज विशेषकर प्रिन्ट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया में औरतों का हयासोज़ अंदाज़ पेश करने को उनकी बेइज़्ज़ती और लैंगिक असमानता पर आधारित रवैया घोषित कर दिया गया, और इस पर पूरी तरह से पाबन्दी लगाने का सुझाव पेश किया गया। इससे यह हक़ीक़त साफ़ हो जाती है कि बेहयाई के कल्चर ने पश्चिमी समाज को गंभीर परिस्थितियों में डाल रखा है।

विश्लेषकों का कहना है कि पश्चिम का यह वह उगला हुआ निवाला जिसे आज अरब शासक निगलने की कोशिश कर रहे हैं, "रोशन ख़्याली" के नाम से जिस फ़ित्ने ने आज अरब की धरती पर क़दम रखा है, इसमें यहूदियों और ईसाईयों की दिलचस्पी और उनका मार्गदर्शन व सरपरस्ती भी शामिल है, उनकी इच्छा है कि अरबों में ज़हनी व तहज़ीबी इरतिदाद, पुरानी जाहिलियत की ओर पेशक़दमी और दीन पर अक़ीदा व अमल में लापरवाही पैदा कर सकें, और हो सके तो फिर उनको इस्लाम से पहले कि अरब जाहिलियत की तरफ़ वापस ला सकें, जिसका यह मग़्रिबी और मसीही क़ायदीन सदियों से ख़्वाब देख रहे हैं। यह मन्सूबा बड़ा नाज़ुक और गोपनीय है। इसको समझने के लिए आलम–ए–अरबी को ज़हानत तथा दूरदर्षिता की ज़रूरत है, दीनी व ईमानी फ़रासत की भी और तारीख़ के बड़े पैमाने पर अध्ययन की भी।

इस्लाही ख़ुतबात

नमाज़ की अहमियत

मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब

"कामयाबी की सबसे पहली शर्त और कामयाबी का सबसे पहला रास्ता यह है कि इन्सान न सिर्फ़ नमाज़ पढ़े बल्कि नमाज़ में ख़ुशूअ अख़्तियार करे, क्योंकि नमाज़ ऐसी चीज़ है कि कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने 62 से ज़्यादा जगहों पर इसका हुक्म दिया। हालांकि अगर अल्लाह तआला एक बार हुक्म दे देते तो भी काफ़ी था, लेकिन नमाज़ के बारे में 62 बार हुक्म दिया कि नमाज़ क़ायम करो, इसके ज़रिए इस हुक्म की अहमियत बताना मक़सूद है कि नमाज़ को मामूली काम मत समझो और यह न समझो कि यह रोज़मर्रा की रूटीन की एक मामूली चीज़ है।"

आजकल हमारे समाज में एक गुमराही फैल गई है, वह यह है कि लोगों के दिमाग़ में यह बात आ गई है कि बहुत से ऐसे काम हैं जो नमाज़ से ज़्यादा अहमियत रखते हैं, ख़ास तौर पर यह बात उन लोगों के अन्दर पैदा हो गई है जो दीन के काम में लगे हुए हैं, दावत व तब्लीग़ का काम कर रहे हैं, जिहाद का काम कर रहे हैं, सियासत का काम कर रहे हैं, यह लोग यह समझते हैं कि हम बहुत बड़ा काम कर रहे हैं, लिहाज़ा चूंकि हम बड़ा काम कर रहे हैं, इसलिए अगर कभी इस बड़े काम की ख़ातिर नमाज़ छूट गई या नमाज़ में कमी आ गई या कोई नक़्स वाक़ेअ हो गया तो कोई हर्ज की बात नहीं, क्योंकि हम उससे बड़े काम में लगे हुए हैं, हम दावत व तब्लीग़ के काम में और अम्र बिल मारूफ़ और नहीं अनिल मुनकर के काम में लगे हुए हैं, जिहाद के काम में लगे हुए हैं और सियासत के काम में लगे हुए हैं, इसलिए अगर हमारी जमाअत छूट जाएगी तो हम घर में नमाज़ पढ़ लेंगे और अगर नमाज़ का वक़्त निकल गया तो क़ज़ा पढ़ लेंगे, याद रखिए! यह बड़ी गुमराही वाली सोच है।

हज़रत उमर (रज़ि0) से ज़्यादा दीन का काम करने वाला कौन होगा? उनसे बड़ा सियासत जानने वाला कौन होगा? उनसे बड़ा जिहाद करने वाला कौन होगा? उनसे बड़ा दायी और उनसे बड़ा मुबल्लिग़ कौन होगा? लेकिन वह अपने तमाम फ़रमांरवाओं को बाक़ायदा यह फ़रमान जारी कर रहे हैं कि मेरे नज़दीक तुम्हारे सब कामों में सबसे अहम चीज़ नमाज़ है। अगर तुमने उसकी हिफ़ाज़त की तो तुम्हारे और भी काम ठीक होंगे और अगर उसको ज़ाया कर दिया तो तुम्हारे और काम भी ख़राब होंगे।

तुम अपनेआप को काफ़िरों पर क़यास मत करना, ग़ैरमुस्लिमों पर क़यास मत करना और यह मत सोचना कि ग़ैर मुस्लिम भी तो नमाज़ नहीं पढ़ रहे हैं, मगर तरक़्क़ी कर रहे हैं, दुनिया में उनका डंका बज रहा है, ख़ुशहाली उनका मुक़द्दर बनी हुई है और दुनिया के अन्दर उनकी तरक़्क़ी के तराने पढ़े जा रहे हैं। याद रखो! तुम अपनेआप को उन पर क़यास मत करना, अल्लाह ने मोमिन का मिज़ाज और मोमिन का तरीक़ा–ए–ज़िन्दगी क़ाफ़िर के मुक़ाबले में बिल्कुल मुख़्तलिफ़ क़रार दिया है, कुरआन करीम का कहना है कि मोमिन को कामयाबी नहीं मिल सकती जब तक वह उन कामों पर अमल न करे जो बयान किए गए हैं और उनमें सबसे पहला काम नमाज़ है।"

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 01 | January 2022 | Volume: 14

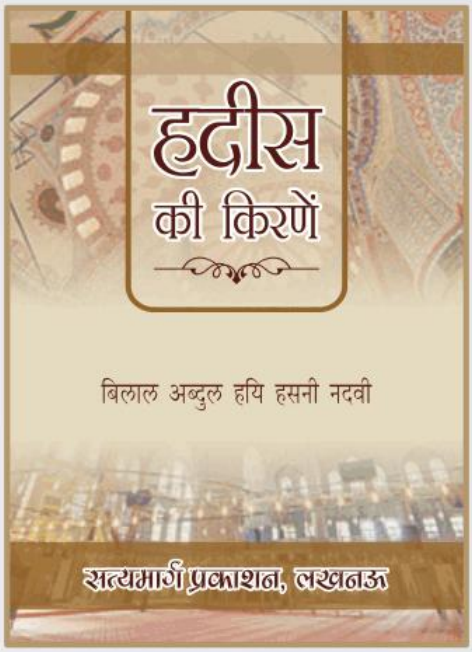

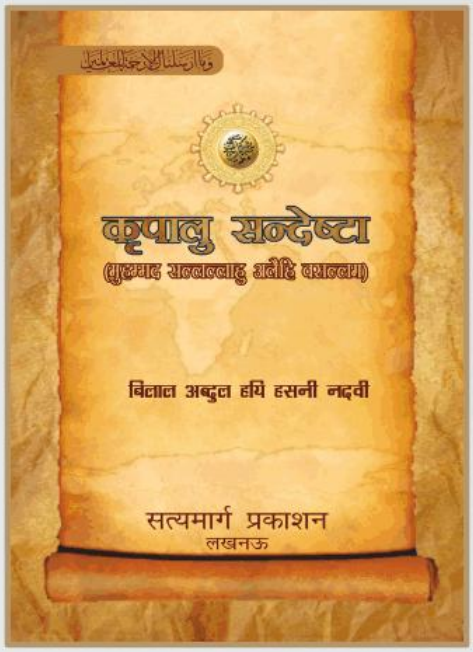

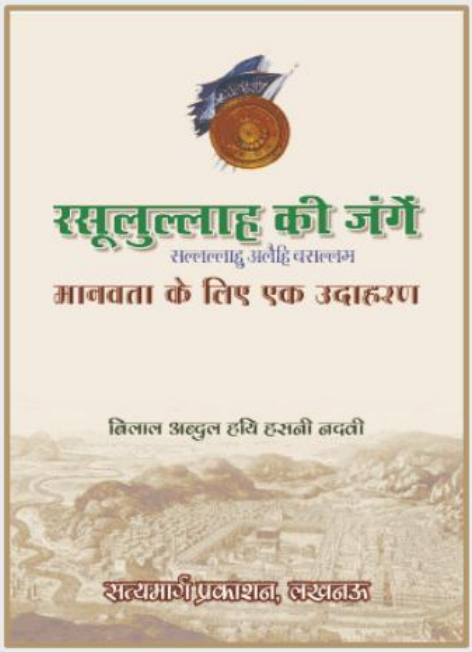

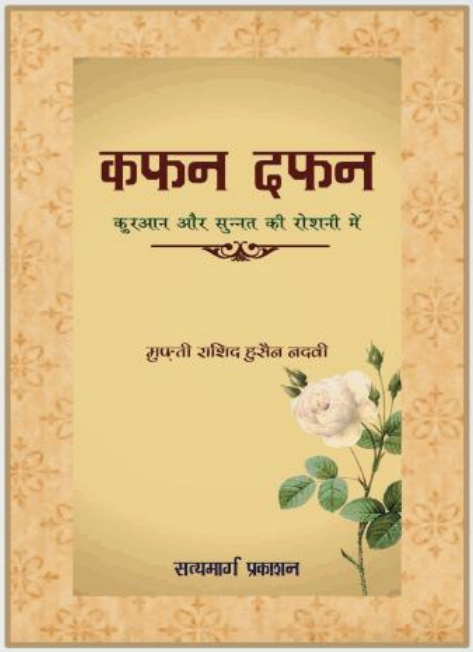

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.